ॐ

॥ श्री सतनाम साक्षी ॥

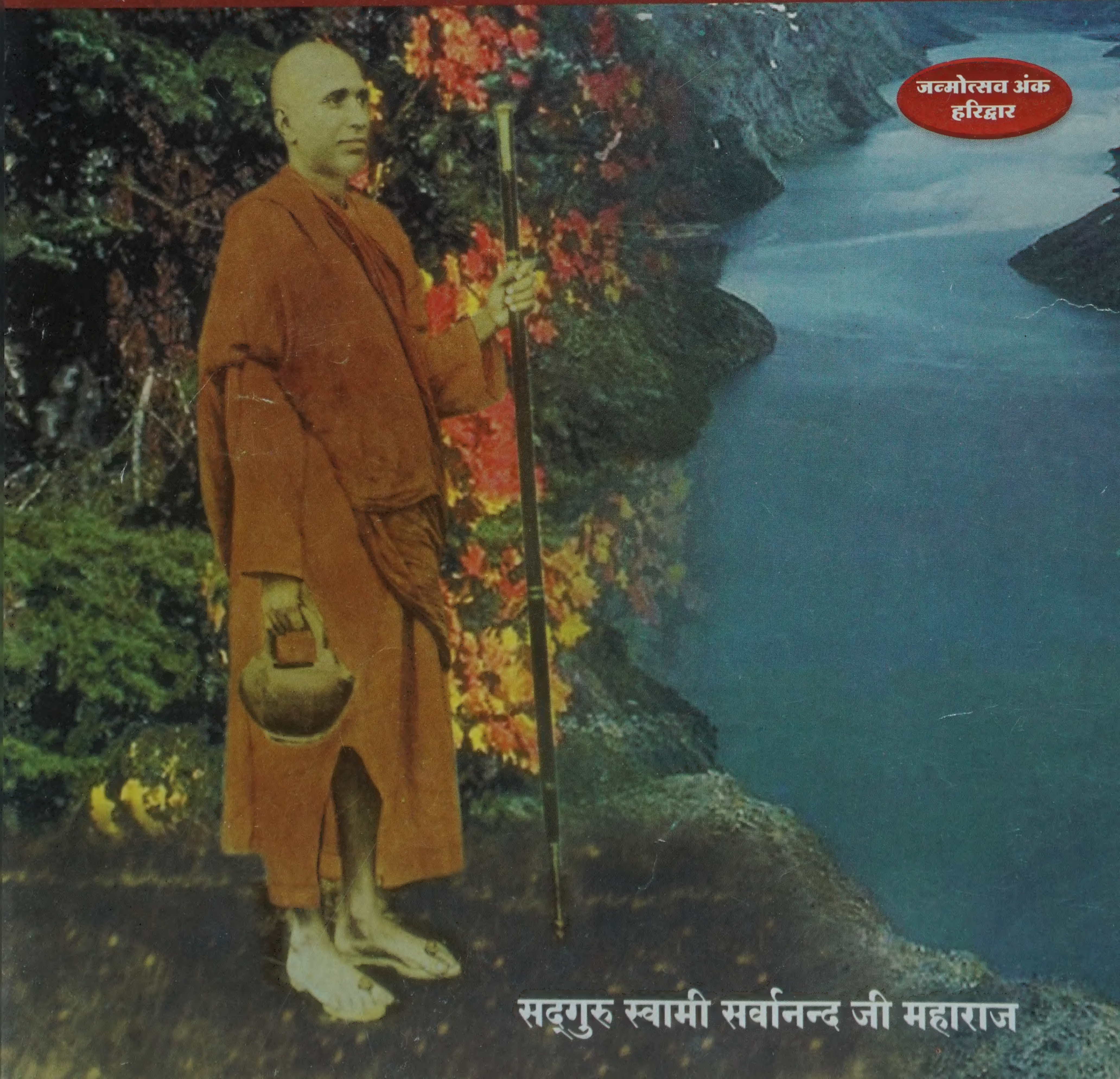
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज

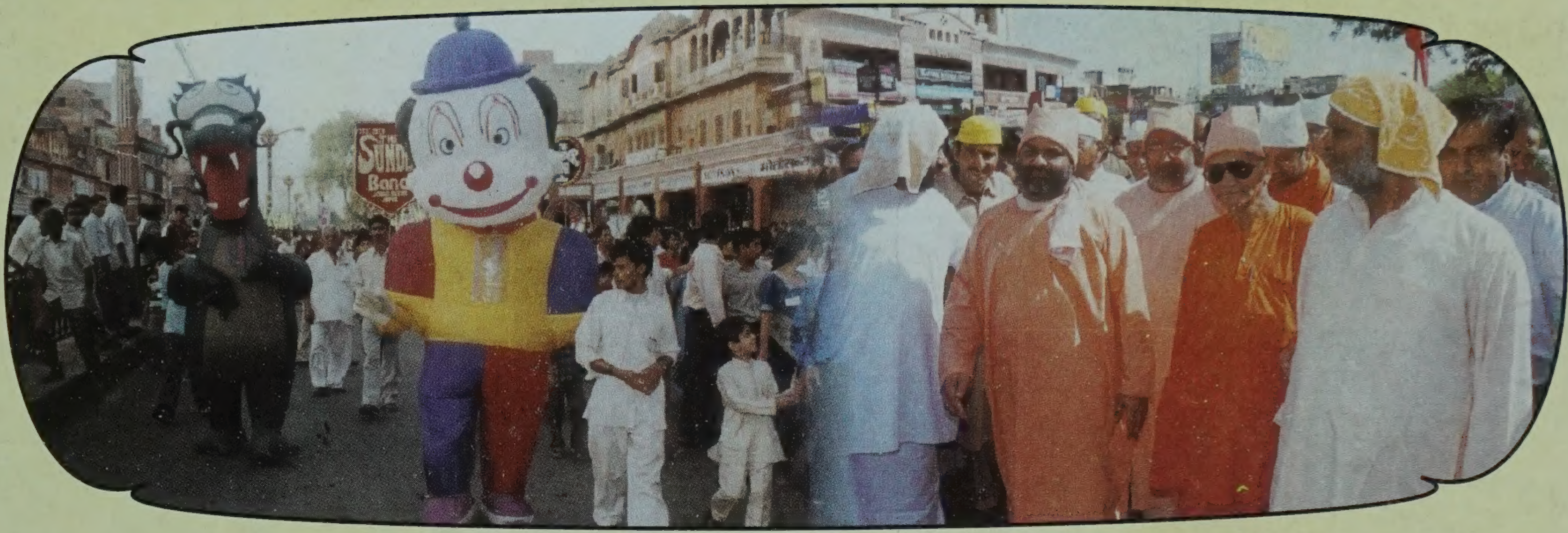
15 अक्टूबर, 2002 | वार्षिक शुल्क : भारत में 50रु. विदेश में 350 रु. | वर्ष 22 अंक 12



सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

81 वाँ चैत्र मेला 2002 श्री अमरापुर स्थान, जयपुर









प्रार्थना

यह प्रार्थना सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज प्रतिदिन प्रातः आचार्य श्री के समक्ष विया करते थे।

हे परम पिता समर्थ बाबा! सच्चिदानंदघन! परिपूर्ण परमात्मा! ब्रह्माण्ड नायक! सदा सुखदायक! अविनाशी। घट घट वासी! स्वयं प्रकाशी! सब सुख राशि! सच्ची सुमति देना। स्वांग की लज्जा रखना। नगर बन में रक्षा कीजे। अभयदान प्रभु सबको दीजे।। देश–परदेश दासों–बच्चों की रक्षा करना। धर्म की लज्जा रखना। अपनी चलती चलाना। अन्तकाल सुहेली करना। तन–मन–धन वाणी करके मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे। सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा। परम धर्म ये नाथ हमारा।। सुत अपराध करते हैं जेते। जननी चीत न राखत तेते।। जैसे बालक भाव स्वभावे, लख अपराध कमावे। कर उपदेश झिणके बहु भान्ती, बहुरि पिता गल लावे।। सतगुरू तुम पूरण करो, मेरी यह अर्दास। कहे टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस।।

आशवन्दी गुरू तो दर आई, तुम बिन ठौर न काई। तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाई।। पाइ पलउ मैं पेरे प्यादी, आयसि हेत मंझाई।। तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही।। नाम तुम्हारा साबुन करसां, धोसां पाप सभेई। कहे टेऊँ गुरू लोक तीन में, आवागमन मिटाई।।

ॐ शांति! ॐ शांति!! ॐ शांति!!!

भजन

सद्गुरु सर्वानन्द जी का आज अवतार हो गया

थलुः-कुदरत का देखो चमत्कार हो गया।
सारे जगत में जै जै कार हो गया।
सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का
धरती पे आज अवतार हो गया।

१. आई सुहानी देखो आज ये घड़ी
बरसे गगन में सुमन की लड़ी
सारा चमन गुलजार हो गया।

२. ईश्वरी माता के हैं भाग्य का कमाल
सेवकराम जी भी हो गये निहाल
चन्दा का सबको दीदार हो गया।

३. खुशियों में झूमें सारा भिटशाह गाम
जन्में अवध में जैसे कौशल्या के राम
घर–घर आनन्द का संचार हो गया।

४. झूले में झूल रहे स्वामी सर्वानन्द
जैसे यशोदा ग्रह झूले ब्रज चन्द
निर्गुण ब्रह्म साकार हो गया।

५. दर्शन देने आए स्वामी टेऊँराम
गोदी में लेके मुख चूमा सुखधाम
आँखों आँखों में इकरार हो गया।

६. आया अनोखा दिन आज बेमिसाल
सत्गुरु आए हुए एक सौ हैं साल
गद्–गद् सारा संसार हो गया।

७. गंगा किनारा हरिद्वार गुरु धाम
सत्गुरु के जन्मोत्सव का मेला अभिराम
"मनोहर" अजब इसरार हो गया।

स्वामी मनोहरप्रकाश जी,
प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा

सद्गुरू सर्वानंदाष्टकम्

सर्वज्ञं सद्गुरूं देवं, सर्व जीव हिते रतम्।
अज्ञानाद्ध्वान्त विध्वसं, सर्वानंदं नमाम्यहम्।।१।।

सब कुछ के ज्ञाता, सद (श्रेष्ठ) गुरु, सब प्राणियों का
करने में लगे हुये, अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश क
वाले स्वामी श्री सर्वानंद जी को मैं प्रणाम करता हूँ।।

ब्रह्मज्ञं सर्व धर्मज्ञं, ब्रह्मचारि व्रते स्थितम्।
नियता क्रियावनतं धीरं, सर्वानंदम् नमाभ्यहम्।।२।।

जिन्होंने ब्रह्म को जान लिया है, जो सभी धर्मों के ज्ञात
ब्रह्मचर्य व्रत के पालन में स्थित हैं। (अर्थात् दृढ़
शास्त्रेक्त क्रियाओं के कर्ता और धैर्यवान हैं ऐसे स्वामी
सर्वानंद जी महाराज को मैं नमन करता हूँ।।२।।

तपस्विनं सुसिद्धं च, शिष्य संताप हारकम्।
सर्वेषां ज्ञान दातारं, सर्वानंदं नमाभ्यहम्।।३।।

परम तपस्वी, प्रसिद्ध सिद्ध संत, अपने शिष्यों के संताप
शोक को हरने (दूर) करने वाले और सभी को ज्ञान देने
सद्गुरू श्री सर्वानंद जी को प्रणाम है।।३।।

ज्ञान विज्ञान सम्पन्नं, सर्व ताप विनाशकम्।
रक्षकं सर्व धर्माणां, सर्वानंदं नमाभ्यहम्।।४।।

वेद शास्त्रें के ज्ञान और विशिष्ट ज्ञान शाखाओं के वे
(ज्ञाता), सभी शोकों के समूल नाशक (नाश करने वाले)
सभी धर्मों के रक्षण के लिए तत्पर स्वामी जी को मेरा प्र
है।।४।।

प्रेम प्रकाश मण्डल, रक्षार्थ धृत विग्रहम्।
सर्व स्वरूपं सर्वेशं, सर्वानंदं नमाम्यहम्।।५।।

प्रेम प्रकाश मण्डल की रक्षा के लिए शरीर धारण करने व
सम्पूर्णता की मूर्ति (अर्थात् स्वयं में पूर्ण), सभी के ई
(स्वामी) स्वामी श्री सर्वानंद जी महाराज को प्रणाम है।।

पूर्णज्ञान समायुक्तं, जगद्ज्ञान विनाशकम्।।
परे ब्रह्मणि निष्णातं, सर्वानंदं नमाभ्यहम्।।६।।

सभी प्रकार के सद्ज्ञान से सम्पन्न, भौतिक एवं न
सांसारिक ज्ञान से शून्य (रहित) पूर्ण ब्रह्मज्ञानी स्वामी
सर्वानन्द जी महाराज को प्रणाम है ।।६।।

गत्वादेश विदेशे च, सत्य धर्म प्रचारकम्।
अध्यात्म ज्ञान सम्पन्नं, सर्वानंदं नमाभ्यहम्।।७।।

देश और विदेशों में जाकर सत्य और धर्म का प्रचार क
वाले और आध्यात्मिक ज्ञान से सुसम्पन्न स्वामी श्री सर्वा
जी को प्रणाम है।।७।।

निर्मानं निर्भयं चैव, द्वंन्द्वातीतम् तथैव च।
निःसंग निर्मलं चैव, सर्वानंदं नमाभ्यहम्।।८।।

अहंकार रहित, निर्भीक, दुविधा शून्य (द्वन्द से परे), आस
रहित (अनासक्त) और स्वच्छ मन वाले स्वामी श्री सर्वा
जी महाराज को प्रणाम है।।८।।

महात्म्यम्

सर्वानंदाष्टक मिदं, यः पठेत् प्रयतः पुमान्।
ज्ञान सिद्धि स लभते, मोक्षार्थी मोक्ष माप्नुयात्।।१।।

इस सर्वानंदाष्टक का जो भी प्रयत्नपूर्वक पाठ करता है वह
और सिद्धि प्राप्त करता है। मोक्षार्थी की मोक्ष होती है।।

विद्यार्थी लभते विद्यां, धनार्थी धन माप्नुयात्।
पुत्रर्थी लभते पुत्र्म्, सुखार्थी च सुखं लभेत्।।२।।

विद्या चाहने वालों को विद्या प्राप्त होती है, धन चाहने व
को धन मिलता है, पुत्र की कामना करने वाले को पुत्र
होता है सुख चाहने वालों को सुख मिलता है।।२।।

सायंकाले प्रवोधे च, यात्रकाले च यः पठेत्।
तस्य मृत्यु भयं नास्ति, सर्व विजयी भवेत्।।३।।

प्रातःउठते ही, सायंकाल में और यात्र के समय में
सर्वानंदाष्टक का जो पाठ करता है उसको मृत्यु का
नहीं लगता और वह सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।।३

श्री स्वामी सर्वानंद महिमा

श्लोकः-सर्वानन्द प्रदातारं सर्वानंद विकासकम्। सर्वानंदावितारंच सर्वानंद नमाभ्यहम्।।१।।

भावार्थः- सम्पूर्ण आनंदों के देने वाले, सम्पूर्ण आनंदों के विकास करने वाले, सम्पूर्ण आनंदों के अवतार रूप, सर्वानंद (पूर्णानंद, नित्यानंद, ब्रह्मानंद, अखण्डानंद, अनन्तानंद, परमानंद, आत्मानंद, स्वरूपानंद) सन्दोह विग्रही श्री स्वामी सर्वानंद जी महाराज के परम पावन चरण कमलों में, मैं सादर नमन करता हूँ।

श्लोकः-श्रीमान् श्रोत्रि ब्रह्मनिष्ठ मुकुटालंकार रूपो गुरूः। योगः क्षेमकरः सुपूज्य चरणौ रामेण तुल्यो गुणैः।।२।।

भावार्थः-दैवी–विभूति–युत–मान्यत, श्रोत्रि (शब्द ब्रह्माणि, शाब्दे, वेद–विद) ब्रह्मनिष्ठ (परे–निष्णात, ब्रह्मण्य, अपरोक्षानुभवी, आत्मारामीय, अनन्य) मौलि–मुकुटमणि–भूषणोपमित गुरू रूप, योग (अप्राप्ति की प्राप्ति कराने वाले) क्षेम प्राप्तित पदार्थ की रक्षा करने वाले, सुपूज्य–पाद–प ीय, राम.तुल्यीय गुणवान श्री स्वामी सर्वानंद जी महाराज के चिन्मय चरणारबिन्दों में, मैं सादर साष्टांग प्रणाम करता हूँ।

श्लोकः-संस्थाप्याश्रममुत्तमं जयपुरे धर्म प्रचारे रतः। सर्वानंद यतीश्वरो विजयते प्रेम प्रकाशे भुवि।।३।।

भावार्थः-जयपुर में अमरापुर (परमात्मीय) धाम नाम्नीय उत्तम–आश्रम की संस्थापना करने वाले, निःश्रेयस–अभ्योदयी–अध्यात्मीय–सनातन–धर्म के प्रचार–प्रसार में अनवरत रत (संलग्न) रहने वाले, यति (सन्यासियों) के भी अधिपति सद्गुरू स्वामी श्री सर्वानंद जी महाराज इस धरा–धाम पर प्रेम–प्रकाश–मंडल के संरक्षक एवं विजयेता रूप से सिद्धित सिद्ध हैं।

अतः हम सभी प्रेम–प्रकाशी भक्तजन उनके पावन पूज्यपाद–पदों में स्वभाव–सुमनान्जलि समर्पित करते हुये उनसे केवल भगवान की प्रेम–पराभक्ति की ही याचना करते हैं क्योंकि

दोहा :-भगति तात अनुपम सुखभूला। मिलहि जो संत होहिं अनुकूला।। (मानस)

संत महिमा असीम, अगाध और अनंत होने से अलेख्य और अवर्णनीय है यथा।

दोहाः-महि पत्री करि सिंधु मसि, तरू लेखनी बनाइ। तुलसी गनपति सों तदपि, महिमा लिखी न जाइ।। (वैराग्य-संदीपनी)

सद्गुरु स्वामी श्री सर्वानंद जी महाराज के परम पावन प्राकट्य दिवस पर विशेष रूप से रचित सद्गुरू स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज की अन्तःप्रेरणा से उद्भासित। **श्री सद्गुरू चरणारविन्द-अनुरागी**

-सुरेश (सांवल) प्रेम प्रकाशी

मुरैना (म.प्र.)

सत्गुरू सर्वानंद पंचामृत दोहे

-प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा

धृति क्षमा सरलता, अखण्ड ज्ञान भण्डार।
सत्गुरू सर्वानंद है, मधुर सरस सुखकार।।

मैत्री करूणा मुदिता, त्याग तपस्या रूप।
सत्गुरू सर्वानंद जी, संत शिरोमण अनूप।।

कथनी करनी एक है, जीवन आनंद कंद।
वीतराग साधन संपन्न, सत्गुरू सर्वानंद।।

कोमल करूण कृपासिंधू, सुंदर सौम्य सुजान।
सत्गुरू सर्वानंद हैं, सर्व गुणों की खान।।

सत्गुरू सर्वानंद की, है अनोखी रीत।
सत्संग सुमरन स्वाध्याय, पुनि सेवा से प्रीत।।

सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव पर विशेष

भजन

-स्वामी मनोहरप्रकाश
प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा

स्वामी सर्वानन्द अवतार आज धरती पर आए हैं
हुई जग में जै जै कार आज..................
१. सिन्ध देश की धरती प्यारी भिट शाह की नगरी प्यारी
जहां जग के तारन हार आज................
२. धन धन माता ईश्वरी बाई सेवक राम पिता सुख दाई
जहां सब जग के आधार आज......
३. सत्गुरु मेरे पर उपकारी दीन जनों के हैं हितकारी
करें सब का बेड़ा पार आज.........
४. सुन्दर सूरत मोहिनी मूरत चरण कमल की मुझे जरूरत
जाऊँ मनोहर मैं बलिहार आज....

तर्ज-लाल दाना-अनार दाना.....
थलु-गीत गायो गीत गायो
आयो गुर देव मिली गीत गायो
१. सिन्ध देस जी धरती सुंहारी
तहिमें शाह जी भिट भागवारी
भली आयो भली आयो
स्वामी सर्वानन्द जिते भली आयो
२. बारहीं असूअ जी आई सुहानी
स्वामी सर्वानन्द आयो जीय जानी
चन्डु चायो चन्डु चायो
चोदसिं जो धरतीय ते चन्डु चायो
३. विस्पति जो दींह आयो सदोरो
ईश्वरी माता झूले हिंदोरो
सुख पायो सुख पायो
पिता सेवकराम सचो सुख पायो
४. सत्गुर जी आ सुहिणीं सूरत
मधुर मनोहर मोहिणी मूरत
भागु ठाहियो भागु ठाहियो
करे दरशन पहिंजो भागु ठाहियो

तर्ज-नील गगन पर उड़ते बादल
थलु-घड़ी सभागी सुन्दरू आई, आ-आ-आ।
देहि घटे आयो स्वामी सर्वानन्दु सभखे वाधाई आ।।
लहरि खुशीअ जी हरहन्धि छाई, आ-आ-आ।
देहि घटे आयो ....।।
१. महिनो असूअ जो तारीख बार्हीं, विस्पति भागनि वारी
माता ईश्वरी बाईअ जे घरि, आयो कृष्ण मुरारी
सेवकराम जे दिलि में कीन की, खुशी समाई आ।
२. सत्गुर जे अवतार वठण सां, हर हन्धि आनन्दु छायो
चोदसि जो जणु चंडु लही अजु, हिन धरतीअ ते आयो।
देवनि (खुशि थी/उभ मां) गुलनि संदी, बरसाति बसाई आ।।
३. नगर-नगर जे गलीअ-गलीअ में, छाई खुश बहारी।
ज्ञान सन्दो प्रकाशु थियो वई, अविद्या ऊँदहि कारी।
सत्गुरु अहिड़ी प्रेम-प्यार जी, जोति जगाई आ।।
४. सिन्धुड़ीअ जो आहि भागु वरियो, अवतारू वठी गुरु आयो।
भाउर-भेनरू गदिजी सभई, गीत खुशीअ जा गायो।
नची-टपी मनोहर भी दाढी, मौज मचाई आ।।
देहि घटे आयो.........।।

सद्‌गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव पर विशेष

भजन

महर्षि सर्वानन्द की याद

गुरुदेव तेरी याद आती है, हर कली आज मुस्कराती है।
देह का दीप बुझा करके जला दी ज्योति प्रेम की
आज ज्योति वह जगमगाती है गुरुदेव तेरी याद आती है।
ऐसी ज्योति है जलाई जो कभी बुझ न सके।
इस पै दुनिया खुशी मनाती है गुरुदेव तेरी याद आती हैं।

डंका नाम का बजाया स्वामी सर्वानन्द ने

डंका नाम का बजाया स्वामी सर्वानन्द ने
सोये हुओं को जगाया स्वामी सर्वानन्द ने
बचपन से विद्या को पढ़कर गुरु की आज्ञा मानी
अज्ञान अविद्या दूर करूंगा दिल में बात ये ठानी
झंडा प्रेम का लहराया स्वामी सर्वानन्द ने डंका नाम का
मात पिता से तोड़ा नाता गुरु से नाता जोड़ा
त्याग दिया घरबार सभी कुछ मोह ममता को छोड़ा
प्यारे सत्‌गुरु को रिझाया स्वामी सर्वानन्द ने
टेऊंराम को रिझाया स्वामी सर्वानन्द ने डंका नाम का
ऊंच नीच का भेद मिटा कर प्रेम की गंगा बहाओ
आपस में क्यों लड़ते हो तुम झगड़े सभी मिटाओ
भेदभाव को मिटाया स्वामी सर्वानन्द ने सब को प्रेम सिखाया
सब के हित में जीना सीखो सब को गले लगावो
दुखी जनों के कष्ट मिटा कर जीवन सफल बनाओ
ऐसा पाठ पढ़ाया स्वामी सर्वानन्द ने डंका नाम का बजाया
प्रेम प्रकाशी जागो सारे और बुराई छोड़ो
भारत वासी जागो सारे और बुराई छोड़ो
फैल रही बीमारी जो उन से नाता तोड़ो
सीधा मार्ग दिखाया स्वामी सर्वानन्द ने डंका नाम का
बजाया स्वामी सर्वानन्द ने
सतगुरु तेरी महिमा को मैं कैसे कह सुनाऊं
गुरुवर की आज्ञा में चल कर जीवन सफल बनाऊं
सब को गले से लगाया स्वामी सर्वानन्द ने डंका नाम का
डंका नाम का बजाया स्वामी सर्वानन्द ने
सोये हुओं को जगाया स्वामी सर्वानन्द ने

–माता रामप्यारी, प्रेम प्रकाश आश्रम, हिसार

स्वामी सर्वानंद सुखकारी

तर्जः– स्वामी सत्‌गुरू टेऊँराम आये।
थलुः– स्वामी सर्वानंद सुखकारी, हैं साजन संत उदारी।
1. सदा सैलानी, अंतरध्यानी, विषयों से वैरागी।
सुमरन से है प्रीति लागी, संयम धीरज धारी।
2. कथनी करनी एक है जिसकी, बोले मधुरी बाणी।
चंदन सम शीतल हैं सत्‌गुरू, देते आनंद भारी।
3. सम दम आदिक षटगुणधारी, साधन संपन्न स्वामी।
आत्म स्थित हरदम रहते, सभी में देखें कृष्ण मुरारी।
4. धर्म कर्म का पाठ पढ़ाया, सत्य सनातन पथ दिखलाया।
दासजनों को राह लगाया, काटी जम की जारी।

संत सिरताज–स्वामी सर्वानंद महाराज

तर्जः– बहे अखियों से धार।
थलः–स्वामी सर्वानंद महाराज, हैं संतों में सिरताज।
देते अनभय का आवाज, करते सभी प्रणाम हैं।
1. सदा सत्संग में अमृत पिलाते, ज्ञान भक्ति की गंगा बहाते।
करते यथार्थ व्याख्यान, देते सभी को सन्मान–2, करते सभी ......
2. सदा गंगा किनारे पै रहते, ध्यान प्रभू का हरदम हैं धरते।
करते संयम आहार, सदाचार श्रृंगार–2, करते सभी ....
3. नित्य नाम प्रभू का जपाते, गुरू भक्ति को खूब बढ़ाते।
देते आचार–विचार, करते पापों का संहार–2, करते सभी.....
4. अपने जीवन को मधुर बनाया, सभ जीवों को प्रेम पिलाया।
ऐसे संत सदवार, करते ज्ञान गुलजार–2, करते सभी ......
5. दिलीप महिमा तुम्हारी है गाता, नित चरणों में सीस झुकाता।
देखो बल बुद्धि ज्ञान, हरो अविद्या अज्ञान–2, करते सभी .....

–प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा

प्रत्येक मनुष्य को भोजन थोड़ा करना चाहिये। रात्रि को आधा भोजन करना अच्छा है। इससे विवेक शक्ति और आयु बढ़ेगी। अनाज बचेगा, देश की सेवा होगी, और भी कई लाभ हैं।

–सदगुरु सर्वानन्द संदेश

स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी

प्रवचन कै

कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ

दोहाः– प्रथम वंद गुरू पारब्रह्म, जो है सबका मूल।
जांकी इच्छा ते बना, सूक्ष्म जग स्थूल।
हरि हर सूर गणेश पुनि, शारदमात मनाइ।
जाके पदवन्दन किये, सर्व विघ्न मिट जाइ।।
सत्गुरू के पदपद्य का लेकर मैं आधार।
कह टेऊँ संसार में, शोधि लिया निज सार।।
सावधान होके सुनो, प्रीतम प्रीति लगाइ।
शिखरध्वज चूड़ाला की, कथा कहूं मैं गाइ।।

छन्द–
जां ज्ञान वैराग विज्ञाना है, पुनि पतिव्रत–धर्म प्रधाना है।
जितने जग नर नारी हैं वे, इसके सब अधिकारी हैं।
कह टेऊँ जो सुन विचारे, पावहिं सो जन मोक्ष द्वारे।
मात गर्भ में फेर न आवे, अजर अमर घर माहिं समावें।।

सारे प्रेमियो, सत्संगियों, गुरूमुखों, मुमुक्षुओं अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके नेत्र, कानों को अपने मन को सावधान करके हर एक जीव हर एक मनुष्य अपने मन को स्वयं समझावें। बार–बार समझावे। मन की आदतें बदलावें, स्वभाव बदलावें। सत्शास्त्र महात्मा गुरु के वचनों में भगवन्त के नाम पर मन का विश्वास बढ़ायें। ये ही भक्ति करनी है। इतने हमारे ऋषि–मुनि महात्मा करके गये हैं। अभी कर रहे हैं। इसके बाद करेंगे। हे मेरे मन! ये मनुष्य चोला मिला है किसलिए मिला है? ....

दोहाः–मानुष जन्म मिला तुझे, फकत खाने के ना लिये।
ये तो मिला हरि भजन, उस प्रभु पाने के लिए।।

ये मनुष्य चोला किसलिए मिला है। ये खाने–पीने बाल–बच्चे पैदा करने के लिए नहीं खास तौर से भगवान के भजन के लिए, प्रभु को पाने के लिए मिला है। मनुष्य चोले में भगवान मिलेगा, दर्शन होगा। जितना बैठे हो। चैरासी लख जूणी में नहीं, मनुष्य चोले में भगवान से मिलना है। गुरूनानक साहब ने गुरूग्रन्थ साहब में लिखा है।

भई प्राप्त मनुष्य ते देहरिया, गोविन्द मिलन की ये तेरी बरिया।
और काज तेरे कितइ न काम, मिल साध संगत भज केवल नाम।।
गुरू सेवा से भगत कमाई, तबही मानुष देही पाई।
इस देही को सुमरहिं देवा रे सुमरहिं देवा।।
सा देही भज हरि की सेवा।

"भई प्राप्त मनुष्य देहरिया गोविन्द मिलन व तेरी वरीया?" ये गुरूनानक साहब ऐसे कहते हैं म चोला मिला है। मनुष देही वरिया माना–वकत। समय आया है। मनुष्य चोले में इस जन्म में भगवा बिछड़ा तो बिछड़ा, इस जन्म में मिला तो मिला। मन! प्रभु से मिल। मनुष्य चोला मिला है। हम दो पंक्ति कहे। दो वारी पंक्ति प्रेम से भाई–माई पीछे प्रेम से बोलें। पहले अपने मन को स्वयं समझावें। सत् शास्त्र समझायेंगे। क्या कहें:–

यही जपन की वेला, श्री राम जपो मन मेरा।
निशदिन प्रभु के गुण गाओ, निशदिन प्रभु के गुण ग
जीवन मुक्ति जग में पाओ, जीवन मुक्ति जग में प
काल करे नहीं घेरा, श्री राम जपो मन मेरा।
यही जपन की वेला, श्री राम जपो मन मेरा।

गज के बोलो श्री रामचन्द्र की जय! हे मन! ये मनुष्य चोला मिला है प्रभु का भजन मनुष्य चोले में। मनुष्य चोले में ही फल मिल चौरासी लख जूणी में अपनी–अपनी भाषा में कर रहे हैं। लेकिन उन्हें फल नहीं मिलेगा अधिकारी नहीं हैं। इस फल के। मनुष्य चोले फल क्या है? "जीवन मुक्ति" जीवन मुक्ति वि होगी – आत्म ज्ञान से, पूरन ज्ञान पशु सूअ ज्ञान होगा – नहीं, ये विषय भोग पदार्थ कोई का फल नहीं है ये कर्मों का फल है। जितने बैठे हे मेरे मन। ये मनुष्य चोला मिला है। जीते ही कर। मरने के बाद मुक्ति कहां करे। दो प्रका मुक्ति महात्माओं ने लिखी है–

1. जीवन मुक्त 2. विदेह मुक

जिसने पहले जीवन मुक्त किया है व विदेह मुक्त का फल पायेगा। हे मेरे मन! प्र भजन कर। जैसे– चूड़ाला मदराचल बन में शिखरध्वज अपने पति को ऋषि का सांग कुम्भज मुनि नाम रखवा के विश्वास बढ़ाकर

का पुत्र, ब्रह्मा का पोता ब्रह्मा का शिष्य बोलकर राजा का विश्वास बंधाकर उपदेश कर रही है। हे राजन्! इधर मंदराचल बन में तू बैठा है। किसी महात्मा के शरण में जाकर बैठ। दृष्टान्त काफी दिये हैं। अन्त में कहने लगी हे राजन्! चूड़ाला ने तेरे को ज्ञान दिया, संतों ने तेरे को ज्ञान दिया पण्डितों ने तेरे को आत्म ज्ञान दिया। तूने त्याग दिया है। तूने निरादरी की है। ....

"इतना सुनके मुनि से, भूप भया हैरान।
कैसे जानत हाल मम्, खोल कहो भगवान।।"

प्रभु बराबर बात सच्ची है। परन्तु आप कैसे जानते हैं चूड़ाला, संतों ने बराबर ज्ञान दिया है, निरादरी की है, अपमान किया है। राजा को पता नहीं। ऋषि सांग पहने, फिर ढूंढ़ कर राजा का विश्वास बंधाया है। हे प्रभु तू कैसे जानता है। चूड़ाला कहती है हे राजन्।

राजन् मैं जानत सभी, तीन लोक का ज्ञान।
तांते संसा मत करो और सुनो दे कान।
इक तो यह तुम भूल करी जो, ब्रह्म ज्ञान को त्याग दिया।
और करी तब मूर्खता जो, सर्व त्याग तुम नाहिं किया।
ब्रह्म ज्ञान से इसी जीव का, जन्म–मरण मिट जाते हैं।
सर्व त्याग से सुख ही होता, दुःख कभी ना पाते हैं।

हे राजन् मेरे को संतों, ब्रह्मा ने आशीर्वाद किया है कि तू सर्वज्ञ होगा। ये कोई कैसे जानता है क्या? चूड़ाला उधर राज कर रही है। चिन्ता कर रही हो, रो रही है। मेरे को पता है वो क्यों रो रही है? इतना कथा का प्रसंग होकर के आया? आज के प्रसंग में वशिष्ठ निर्वाण प्रकरण में बाल्मीक कहता है – हे भारद्वाज, वशिष्ठ महाराज कहता है– हे रामजी, सत्गुरू महाराज कहते हैं – हे जिज्ञासु, गुरूमुखों, मुमुक्षुओं इतना कहकर चूड़ाला कहती है – हे राजन्

"इक तो यह तुम भूल करी जो, ब्रह्म ज्ञान को त्याग दिया।"

बहुत तूने भूल की है। ब्रह्म ज्ञान को त्यागकर के निरादरी की है। संतों की, पंडितों की, चूड़ाला की, परन्तु तूने ज्ञान की भी निरादरी की है। कटु वचन कहे हैं–

"और करी तब मूर्खता जो, सर्व त्याग तुम नाहिं किया।"

तूने त्याग नहीं किया है। त्याग के बिना काम बनेगा कैसे! जिन्होंने पाया है। त्याग किया। त्याग से ही परमपद की प्राप्ति की है। श्री रामचन्द्र ने त्याग किया– राज का। श्री कृष्ण भगवान ने त्याग किया, भगवान शंकराचार्य ने त्याग किया, बुद्ध भगवान ने त्याग किया, कबीर साहब ने त्याग किया, गुरूनानक साहब ने त्याग किया, सत्गुरू टेऊँराम महाराज ने त्याग किया। त्याग दो प्रकार का होता है – याद करना। जो थोड़े दिन यहां पर है जो चार वचन सुनों उसको पहले घर जाकर विचार करना। अगर शंका होवे तो पूछना क्योंकि उधर शंका समाधान काल बहुत चला था। कई प्रेमियों ने पूछा था। अगर शंका न हो तो जो चार वचन सुनो उसका विचार करना। हे मरे मन! अगर इन वचनों पर सच्ची विश्वासकरेगा तो लोक–परलोक में सदा सुखी होगा। "बोलो सत्गुरू भगवान की जय" कभी भी दुःखी नहीं होगा। दुःख तूने अपने आप खरीद लिया है। दुःख है ही नहीं। हे राजन्! तूने त्याग नहीं किया।

"त्याग, तप सच, सादगी, प्रार्थना पुनि विश्वास।
कह टेऊँ ये धार के, पाओ सुख अविनाश।।"

त्याग दो प्रकार का होता हैः–

1. स्थूल त्याग 2. सूक्ष्म चित्त का त्याग।

दोनों त्याग होवें तो बलिहारी नहीं, तो चित्त का त्याग होवे। जितने प्रेमी बैठे हों! 1. स्थूल त्याग किसको हैः– बाल–बच्चे को छोड़कर जंगल में बैठना, तीर्थ में जाये या महात्मा के आश्रम में जाकर बैठे। ये स्थूल त्याग है।

सूक्ष्म त्याग किसको कहते हैंः– चित्त से त्याग करें, मन से भोगों की वासना का त्याग करके वेदविहित वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुए परमात्मा का भजन करता रहे। गृहस्थ के अंदर कैसे त्याग करे? शिक्षा पत्र के अंदर एक शिक्षा आती है हरिः–

"धर्मशाला जान घर को, जीव सब महमान है।
मोह किससे ना करो, ये स्वप्न का सामान है।"

ये घर संसार सारा धर्मशाला है जो बोलता है मैं मुसाफिर हूं। मेरे को गुजर करना है वो संसार में कभी दुःखी नहीं होगा। दावा नहीं जमाना, मेरी कुछ भी नहीं है। हे मेरे मन! त्याग, तप! तप करो। महात्मा गांधी ने तप किया। महात्मा व्रत रखते थे। महात्मा गांधी सोमवार का महात्मा विनोबा। अभी है–

नागपुर, अजमेर। उधर नागपुर हम गये थे वो मंगलवार व्रत करते थे। तप करते थे। किसके लिए। जब माता सती पिता के यज्ञ में हवन हो गई। तब फिर जन्म जाकर के लिया। किधर? उत्तराखंड में। तप किया। संसार तप से बना है। हरिः–

चौपाईः–तप बल रचइ प्रपंचु विधाता
तप बल विष्णु सकल जग त्राता।
तप बल संभु करहिं संघारा
तपतें अगम न कछु संसारा।।

ब्रह्मा कई हुये हैं इस जगत में, इनकी बड़ी कथायें हैं। विष्णु भगवान ने तप किया सदाशिव संघार नहीं कर सका, तप किया, इन्द्रियों का तप, वाणी का तप। वो धीरे–धीरे आपको बतायेंगे। तो कैसे करें। प्रेम से बोलो हरे राम। तप करें। त्याग, तप, सच अपने स्वार्थ, सुख के लिए कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। झूठे आदमी का कभी उद्वार नहीं होगा। परोपकार, दूसरे के भले के लिए भली झूठ बोलो। बाकी अपने लिए नहीं।

''सच बराबर तप नहीं, झूठ बड़ौ बड़ पाप।
जांके ह्रदय सच बसे तांके ह्रदय आप।''
सच, सच से प्रीति करो। सच से प्रीति सदा सुखदायी।
सच से प्रीति करिये जी, जिस प्रीति से सुमत मिलत है सर्व कारज जग सरिये जी
सच की सेवा निशदिन करके, द्वन्द्व सुःख को हरिये जी।
कह टेऊँ तुम सच को हरदम, अपने ह्रदय धरिये जी।

सच, सच में बड़ी ताकत है सच कभी नास नहीं होगा।

''आद् सच जुगाद सच है, है भी सच, नानक होसी भी सच।'' सच को छिपाना नहीं चाहिए। सच वो तेरे अन्दर है। जिसके कारण यह झूठा शरीर चमक रहा है। स्वार्थ के कारण झूठ नहीं बोलना चाहिए। त्याग, तप, सच, सादगी। सादगी भी करो। ये है परलोक। जो आप आये हैं हम भी आये हैं तुम्हारे पास। ये है परलोक। इधर की भाषा दूसरी, लोग दूसरे, खाना–पीना दूसरा, चलना–फिरना दूसरा, सब दूसरा। अपने देश का यह भी परलोक है पर नाम है– पर्दे का। जो बैठे हैं। इस परलोक को सिंगारे। जो बैठे हैं। अगर इसको सिंगारा तो जो तीसरा परलोक है वो अपने आप सुधर जायेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। कैसे सिंगारें? ये बात इधर
हैं। फिर आप को बतायेंगे। त्याग, तप, सच, सा
प्रार्थना, विश्वास। विश्वास करके प्रार्थना करें। वि
के बिना पूरण, सम्पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं ह
प्रार्थना करें। सत्गुरू महाराज को। कौनसी प्र
करें। हरि–

कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ–2
होवां मैं गृहस्थी परम उदारी, दया धीरज सत्य व्रत
तीर्थ नाऊँ व यज्ञ कराऊे, मुझे बताओ ....
कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ।

हे भगवन् मैं कैसे तुझे पाऊँ। हे भगवन्
तेरा दर्शन करूँ। कैसे मुक्ति मिले। मोक्ष के, भ
के दर्शन के रास्ते हैं– दो। याद करना।

1. गृहस्थ मार्ग 2. त्याग मार्ग

हे प्रभु मैं गृहस्थ के अन्दर भक्ति करूँ। कैसे

''होवां मैं गृहस्थी परम उदारी, दया धीरज सत्य व्रत

गृहस्थी क्या है? परम उदारी। दुनिय
अन्दर दो तरह के लोग होते हैं– 1. उदार
परमउदारी। उदारी किसको कहते हैं– जो स्व
भी सुख दे और दूसरों को भी सुख दें। परम
किसको कहते हैं– जो स्वयं को दुःख देकर
को सुख दें। जैसे– अगर अभी भी न समझा
घर में दो रोटियां रखी हुई हैं। रोटी में सारी द
के पदार्थ आ गये। एक मेरे खाने के लिए,
ज्यादा रखी है। आता है घर पर मंगता भूख
भगवान के नाम पर रोटी दे। जो ज्यादा है वो उ
दे दी। इसको कहते हैं उदारी। परमउदारी कि
कहते हैं। रोटी है– एक। मेरे खाने के लिए।
है कोई प्रभु मैं भूखा हूं, रोटी दे। तो अपनी
उसको दे दी, तो इसे परम उदारी कहा जात

एक परम उदारी गरीब मजदूरी करके प
पैसे, आपको पता हे सिन्ध के सभी हो। पहले
बहुत सस्ता था। अनाज या और कुछ सस्त
तीन–चार आना मजदूरी। क्या करें? सौदा लेव
वो रोटी बनाकर स्त्री पुरूष और दो उनके बच्च
जीव रात को रोटी खाकर दिन को पानी से
करते थे। सच्ची करके पूछो। पानी पर गुजर
थे। रात को एक वक्त रोटी खाते थे। एक
मजदूरी करके सौदा लेकर शाम के समय जब

तो घर एक मेहमान परदेशी मुसाफिर वो देखा कि दूर से आ रहा है। कहने लगा – आओ। खाट पर बिठाकर स्त्री को बोला – जल्दी रोटी बना। पानी पिलाकर खबरचार मेहमान से लेने लगा। भाई कंवरराम के मुल्क में गुरू महाराज की मण्डली आती थी। तो प्रसाद लेकर के खबरचार लेने जाते थे। खबरचार बताओ। जब खबरचार बतायी तो खबरचार में से साबित हुआ। तो इसने सारा दिन रोटी नहीं खायी है। सुबह को चला है पानी पर गुजर किया है। ख्याल मत करो। आया, स्त्री के पास। बोला–खबर सुनी है। इस मेहमान ने सारे दिन रोटी नहीं खाई है। हमने भी नहीं खाई है। खाना है, चार लोगों का। मेहमान कैसे खाये? बोले–प्रभु जैसे आज्ञा करो। बोला– जैसे मैं कहूं वैसे करेगी। स्त्री का धर्म है पतिदेव की आज्ञा मानना। पतिदेव की प्रसन्नता से चले। जो आज्ञा करो। रोटी सब पकाकर के दाल कटोरों में डालकर के परन्तु तीन कटोरों में दो खाली रखना, पानी के गिलास भरकर के रखना। रोटी सारी, दाल रखना। जैसे अपन खाते हैं। मैं मेहमान को लेकर आऊँगा। बच्चे भूखे रहेंगे। मेहमान कहने लगा, तू अपनी स्त्री को भी बुला, साथ में खाना खाऐंगे क्योंकि पहले साथ खाने का रिवाज ज्यादा था और मेहमान मुसाफिर की भी सेवा करते थे। अतिथि की सेवा भगवान से बढ़कर महात्माओं ने लिखी है। कहूंगा कि स्त्री अपने आप खायेगी। खट्ट्री सुनार भी खाते थे साथ में। अगर टुकड़ी बची है तो अपन खायेंगे नहीं, तो कल खायेंगे। बोली– हां प्रभु, मैं करूंगी। सब कुछ समझाकर स्त्री को मेहमान के आगे बैठे। मेहमान को लेकर आया। बच्चे तो दौड़कर आगे आकर बैठे। मेहमान आकर बैठे तो कहने लगा कि अपनी स्त्री को बुला तो साथ में खायें कहा वो अपने आप खा लेगी। बोला– नहीं, सब साथ में खाये। स्त्री को बुलाया। स्त्री आई तो साड़ी के पतलांद से दीपक को बुझाती आई। मेहमान बोला दीपक जलाओ, बोले बाद में जलायेंगे पहले खा लेवें मेहमान व बच्चे खाके सारा भोजन खत्म किया उन दोनों ने केवल पानी पिया। मेहमान, खाली न जाये पर खुश होकर जावे, ये गृहस्थ के अंदर भक्ति करनी है जितने बैठे हो।

"होंवा मैं गृहस्थी परम उदारी, दया धीरज सत्यव्रत धारी।"

प्रभु दिल में दया धारे।

"संसारी तो दया धार, ना तो भलो वैराग।
वैराग बंधन पड़े, तांके बड़े अभाग।।"

प्रभु दया करो, सत्य सत्यवादी बनूं। यज्ञ करूं, तीर्थ करूं, दान–पुण्य करूं। गृहस्थ के अंदर ये ही भक्ति करूं। अगर बोलो तो, त्याग के अंदर, त्याग की भक्ति कठिन है। पर वो करूं कैसे।

होवां मैं साधु निज सन्यासी, मंदिर छोड़ बनूं बनवासी।
निज सन्यासी मंदिर छोड़े, बनूं बनवासी।
जट्टा बढ़ाऊं, वां मूंड मुड़ाऊँ, सिर को मुड़ाऊँ।
कैसे ध्याऊँ प्रभु, कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ। ....

हे प्रभु, मैं साधु बनूं। सन्यासी, सन्यासी चौथे आश्रम का। ब्रह्मचारी गृहस्थ सन्यास। चौथे आश्रम का बनवास लेकर हे प्रभु। सन्यासी हो। मैं जंगल में रहूं। फल–फूल खाऊँ। जैसे कहो–जटा रखवाऊँ या सर को मुड़ाऊँ। मैं करने के लिए तैयार हूं, पर प्रभु तेरा दर्शन हो। मेरा जन्म–मरण का फेरा काटो अथवा

होवां मैं पण्डित कर्माचारी, ठाकुर पूंजू हो पुजारी।
भोग लगाऊँ या घंटी बजाऊँ,
कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ।......

हे प्रभु। मैं कर्मकांडी होकर एक मंदिर बनाकर उसमें तेरे को बीच में बिठाकर फिर आरती करूं। आरती करके भोग लगाऊँ। फिर पर्दा दूं। पर्दा क्यों देते हैं, पता है। खाते कैसे हैं?, क्या खाना चाहिए? किधर खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कितना खाना चाहिए, क्यों खाना चाहिए। फिर ये आपको बतायेंगे?

"भोजन, भजन, धन पुनि नारी, ये चारों पर्दे के अधिकारी।"

भोजन भी पर्दे के अंदर खाना चाहिए, भजन भी जो हाल है ना। भोजन, भजन और धन भी पर्दे के अंदर रखना होगा? रूपया पांच हजार निकालकर नदी के किनारे पर बैठे तो पता चले? दूर शहर माता, पुत्री, स्त्री भी पर्दे के अंदर बैठेगी तो उतना जस कीर्ति होगी– दुनिया के अंदर। पर्दा देते हैं। पर्दा तो ठीक है। परन्तु घंटी भी बजाते हैं। भोग लगाते हैं, फिर घंटी बजाते हैं, पुजारी–घंटी क्यों बजाते हैं? एक प्रेमी ने कहा– घंटी –भगवान को बुला रहे हैं। घंटी–कोई बच्चा है क्या? घंटी से बुलायेंगे कैसे? घंटी क्यों

बजाते हैं पता है। घंटी पर ही भगवान प्रसन्न हो जायें। याद करना। महात्मा, पूरन, सत्गुरु भगवान प्रेम ओर सेवा के भूखे हैं, किसी पदार्थ के नहीं। भगवान प्रेम से जल्दी प्रसन्न होते हैं। सच्ची करके पूछो भगवान प्रेम पर ही अवतार लेते हैं। भगवान घंटी पर ही प्रसन्न हो जायें। मैं घंटी बजाने के लिए तैयार हूं। हे प्रभु। हे अन्तर्यामी भगवान को ज्यादा पदार्थ नहीं केवल प्रेम चाहिए। जितने भी प्रेमी बैठे हो। गुरू महाराज की मण्डली आयी है। सच्ची करके पूछो। आपके प्रेम की खेंच ऐसी थी हमने सोचा था कि सीधे जाते हैं, लन्दन! उधर छः घंटे लगेंगे। फिर वहां से फेरा करेंगे। हमने सोचा जायें कैसे? फिर क्या करें? प्रेमियों ने फोन किये? प्रेम है। हरि,

ऊँची प्रेम सगाई, दुर्योयन का मेवा त्यागे, साग विदुर घर खाई।
सबते ऊँची प्रेम सगाई, सबते ऊँची प्रेम सगाई।
अर्जुन के रथ घोड़ा हांका, भूल गई ठकुराई।
राज युधिष्ठर यज्ञ सुकीना यज्ञ की झूठ उठायी,
सबसे ऊँची प्रेम सगाई दुर्योधन की मेवा त्यागे,
साग विदुर घर खाई सबते ऊँची प्रेम सगाई।

कृष्ण भगवान ने इसी भूमि में लड़ाई के मैदान में रथ हांका यह बड़ी कथा है। एक बार नौकरों का काम किया। नौकरों का काम किया तो घोड़ों की सेवा भी की होगी। अनुमान प्रमाण सिद्ध करता है। राजा युधिष्ठिर ने यज्ञ किया। श्री कृष्ण भगवान को लेकर के आया– हे प्रभु। आज्ञा दो तो खोले भण्डारा। कृष्ण भगवान कहते हैं–हे युधिष्ठिर। सेवाधारी सारे मुकरर किये हैं। हां प्रभु देखो। मण्डप घुमाकर कृष्ण भगवान कहते हैं। – हे युधिष्ठिर और सारा बंदोबस्त सेवा का दिखाया। सेवाधारी बहुत अच्छे हैं। सारे मुझे पसंद आये हैं। परन्तु ये साधु, ऋषि, मुनि खाकर के उठेंगे तो पंगत की सफाई कौन करेगा। बोला – ये बात भूल गया। थोड़े नौकर रख देते हैं फिर क्या कि ये सफाई मैं करूंगा। युधिष्ठिर, अर्जुन, राजाओं ने बहुत मना किया लेकिन कमर में बांधकर भगवान ने झाड़ू उठायी हाथ में। ऋषि, मुनि, ब्राह्मण खाकर के उठे तो झूठी पतलें उठाकर के बाहर फेंककर के मण्डप की सफाई की। ये बात कहने में थोड़ी हैं, पर बड़ी हैं। अगर घर में कोई पुत्र की सगाई करवायी तो प्यारे से प्यारे मेहमान हो तो उसे कहो मण्डप की सफाई कर झाड़ू देना। गरीब हो तो उठायेंगे, लख भगवान कोई गरीब था क्या? लखपति को कहें की सफाई कर। करेगा। वो तो खाना भी होट खायेगा कि मेरी इज्जत लेता है नास करता भगवान ने ऐसा किया। जितने प्रेमी बैठे हो। ह

ऐसी प्रीत करी वृन्दावन, गोपिनि नाच नचाई
सूर, क्रूर इस योग्य नाहीं, किस विद् करहूं बढ़ाई।
सबते ऊँची प्रेम सगाई, दुर्योधन का मेवा त्यागे,
साग विदुर घर खाई।। सबते ....।

प्रेम से बोलो हरे राम। ''ऐसी प्रीत करी वृन्द गोकुल नाच नचाई।'' कई लोग अर्थ करते हैं। भगवान ने ऐसी प्रीत की। गोपियों, सखियों, अ को रात को मण्डल में नचाया। जितने बैठे आपको यह बात पसंद है। भगवान कहता है अर्जन! मुझे तीनों कालों में, लोकों में कोई कर्म की जरूरत नहीं है। परन्तु मैं नहीं करूंगा तो स भ्रष्ट हो जायेगा। उसके कारण मैं कर्म करूंगा भगवान ने नचाया यह ठीक नहीं है। अर्थ को अ करना भी पाप है। जो बैठे हो। भगवान, अभी देखो। वृन्दावन में विश्वास मन को बढ़ाना कि औरतें नाचती हैं कि लड़के। देखा है• वृन्दावन झूलों का महीना लगता है। लड़के छोटे। भग जब रमण रेती में गोकुल गायों को चराने के 15–20 लड़के मिलकर उधर भगवान बंसी बृज अंदर बजाने का ज्यादा रवाज है। भगवान बजाता था। प्रभु की लीला जब भगवान बंसी बज था। आपने इतने दिन नहीं देखा हो तो आप देखना। भगवान जब मुरली बजाता था। तब टांग ऊपर टांग रखकर नाचने के लिए तैयार हो घुंघरू बांधकर मुरली बजाकर लड़के भगवान नचाये और भगवान भी उन लड़कों के साथ ना

''ऐसी प्रीत करि वृन्दावन गोकुल नाच नचायी

गोपी, सखी एवं आली ये हिन्दी में कहते सिन्धी में भेनरु, इसमें ये औरतों का नाम नहीं है। इ सत्संगी भाई–माई सभी आ गये। जो बैठे हैं। कृ भगवान जब 7–8 साल के बच्चे थे। तब लड़कों नचाया रात को करते थे। मिलकर आपस में।

''ऐसी प्रीत करी वृन्दावन, गोकुल नाच नचायी
ग्वालों को नचाते थे। ''सूर क्रूर इस योग नाहीं'', वि

बेद करहूं बढ़ाई।'' भगवान को नचाने के लिए जोगी अवतार लेकर आया भगवान थोड़े पर कैसे खुश होता है। दुर्योधन का मेवा त्याग कर विदुर साहब के घर खाया। ''सरसों का साग, भोजन अलुणा, रूच–रूच भोग लगायो।'' केसे। दुर्योधन, दुर्योधन ने यज्ञ किया। तैयारी, जब तैयार हुआ। विचार किया। कल खोलेंगे के कृष्ण को नौता दें। भगवान की भावना, तो नहीं थी बोला। कृष्ण तेरे को पता है कि मैं कल यज्ञ कर रहा हूं। कल खोलेंगे तेरे को नौता देने आया हूं आओगे कि नहीं आओगे। बताओ एक बात आओगे कि नहीं आओगे। किसी को भेजने नहीं तू है पाण्डवों के पास। कृष्ण भगवान कहता है– हे मेरा प्यारा। दुर्योधन मैं पाण्डवों के पास नहीं हूं। मैं हूं प्रेम, सेवा के पास। पाण्डवों के पास नहीं हूं। ठीक है नौता देना भी ठीक नहीं है। ऐसे नहीं, कैसे नौता आयेगा कि नहीं। एक बात बता। अपने आप आयेगा न जायेंगे तो गिल्ला करेगा। अच्छा नहीं लगेगा। कहने लगा– तुलसी महाराज ने रामायण के अन्दर मूर्खों, दुष्टों को हाथ जोड़े हैं। पापियों को बोले क्यों? पापी निंदा करें, नरक में जायेंगे। हाथ जोडूं। नरक से तो बचाया सच्ची करके पूछो–भगवान बोले– अच्छा, मैं आऊंगा। बोला– अपने आप आना। हाँ। किस समय? 10 बजे पूरे आना। देर न करना। उधव आया। उधव को कहा–उधव कल जायेंगे 10 बजे। दुर्योधन ने पास में यज्ञ किया –बोला स्वामी इसका नौता क्यों माना है।

''जांकी रहत न जानियें, गुरू प्रीत अनीत।
तांका भोजन पाइये के, बिसरे हरि की प्रीत।।''

इसका नौता क्यों माना है। अगर बात नहीं मानेगें तो बात बनेगी नहीं? निंदा करेगा? फिर स्वामी इसका खाना, खाना तो कोई योग ही नहीं है। जायेंगे नहीं चलेंगे तो सही, बोला–चलोगे तो खाने के सिवा छोड़ेगा। क्या बोला– तेरे को पता नहीं है। मिलेगा ही नहीं – कैसे? ले देख। सुबह 8 बजे मेरे पास आना। उधव आया। कृष्ण भगवान ने पुरूषार्थ किया मैली पौशाक तमाम रंग लगाकर तुंबी हाथ में लेकर तिलक लगाकर माला, पोती लेकर के लकड़ी के हाथ में लेकर के कंगला फकीर अपने साथ लेकर के कंगला फकीर दोनों आये। दुर्योधन के आगे। दुर्योधन ने कहा था यज्ञ में बहुत शोर लगा पड़ा है। मेरे को कैसे पता पड़े कि कृष्ण भगवान आया है। कृष्ण भगवान ने कहा कि तेरे यज्ञ में पैर डालूंगा – ढ़ाई घड़ी पानी दूध हो जायेगा। यह तेरे को वर देता हूं। कृष्ण भगवान ने क्या किया। यज्ञ के दरवाजे पर अन्दर पैर डाला। पानी दूध हो गया। दुर्योधन ने कहा कि कृष्ण आया है आया दरवाजे पर, कृष्ण भगवान कहता है – हे राजन्। हे राजन् तूने यज्ञ किया है। हमको प्रसादी खिला। चुप कर। कृष्ण भगवान चुप हो गया। क्या देखे? फिर आया – दुर्योधन के दूसरे दरवाजे पर। श्री कृष्ण ने कहा – हम दूर से ही तेरा नाम सुनकर के आया हूं। कृपा कर। यज्ञ में से दें। हम चले जायें। तेरे को आसीसा करेंगे। बोले – चुप हो। चुप करो। मार न खाओं। कृष्ण भगवान ने चुप की, आये तीसरे दरवाजे पर। दुर्योधन भी आया। कृष्ण भगवान आया तीसरे दरवाजे पर। कहा– हे राजन् सदायी तू सुखी हो तेरा यज्ञ समपूरन होगा। कृपा करो। थोड़ी प्रसादी, मेरे को तो भूख नहीं लगी है परन्तु मेरे चेले को भूख लगी है। थोड़ा प्रसाद दें। बोला – चुप करो। कमाकर के खाओ। कम ज्यादा बोला फिर आया। चौथे दरवाजे पर। चार दरवाजे यज्ञ के थे। फिर आया कृष्ण भगवान ने कहा – हे राजन् दुर्योधन हम को बहुत भूख लगी है। आये हैं, तेरे को आसीसा करके उसको आया गुस्सा। इसको पट्टेवालों से कहा पट्टे से बांधो। पट्टे वाले तीन–चार आये। आगे कृष्ण भगवान, पीछे उधव, पीछे पट्टेवाला भागें। पट्टे वाले लौट के आये। कृष्ण भगवान ने कहा कैसा है उधव। उधव बोला कि काफी अटकल है। बहुत अच्छा किया। बोला चूसने वाला गरीब है उसकी रोटी क्यों खायें। बोला– स्वामी मेरे को तो भूख लगी है एक बजे का समय हुआ है। बोला– विदुर साहब के घर चलते हैं। आया विदुर के दरवाजे पर बोला – हे विदुर। विदुर दरवाजा खोलने पर ऐसे देखे कि भगवान हैरान हो गया। बोला–प्रभु कैसे सांग पहने हैं। चल अन्दर, बिठा के पलंग पर। प्रभु खबर तो बता। आपको शंका होगी महाराज दुर्योधन चार बार देखा। पहचाना नहीं। विदुर घर दरवाजा खोलते ही पहचाना। दुर्योधन को आंखें नहीं थी। पहचानने की, पहचानने के लए भी आंखें चाहिए।

प्रेम से बोलो हरे राम। बिठाकर स्वामी खबर सुनाओ रोटी, रोटी तो हम खायेंगे। स्त्री को बोला रोटी बनाये। वो लगी रोटी बनाने। विदुर को कहने लगे – कुछ तो दे कुछ तो खाये। है कुछ फल। केले रखे हैं। बोला – लेकर के आओ तो वो पांच–सात लेकर के आये। बोले– तीन केले खाये। फिर दुर्योधन की सारी खबरें भी देने लगे। उस प्रेम में केला जमीन पर और खाल दी भगवान को। भगवान खाकर के उधव को इशारा दिया। खाकर बोलता है हे विदुर। ये बाहर से मंगवायी है क्या ? मैंने कभी खायी नहीं है। बहुत मीठी है। हम और मंगवायेंगे। हां स्वामी? बहुत मीठी है। बोले– खाओ उस समय विदुर की स्त्री रोटी बना रही थी। उसकी सारी नजर भगवान पर। वो देखें कि खाल भगवान को खिला रहा है। दौड़ लगाकर के विदुर के हाथ डाला कि ये क्या कर रहा है? खाल भगवान को दे रहा है हरिः–

प्रेम की रीत कछूं न नहिं राखत, जाति न पाति नहीं कुल गारो।
प्रेमकु नेम कहूं नहिं दीसत, लाज न कान लाग्यो सब खारो।
लीन भयो हरि सूं अभि, आठहु याम रहे मत वारो।
"सुन्दर" को इक जान सकें, यह गोकुल गांव गांव को पैंडोहि न्यारो।
दोहाः– कह टेऊँ हरि प्रेम की, महिमा कहीं न जाय।
प्रेम भरे प्रवाह में, ज्ञान–ध्यान बह जाय।।

विदुर कहता है – हे प्रभु। मैंने भूल की है। उसका ख्याल मत कर। कहा– प्रभु मैंने खालें आपको खिलायी हैं। अब्बा उसका ख्याल मत कर। विदुर तीसरा केला खोलकर खाल फेंकी जमीन पर गिरी दी भगवान को। भगवान खाकर के कहता है – विदुर जैसे पहले मीठी थी वैसे नहीं – क्या? उसके अंदर में प्रेम था घट में। आंखों में से पानी। प्रेम से बोलो हरे राम। विदुर साहब है तो मिठी। भगवान जो पहले खा रहा था वैसी मीठी नहीं है।

प्रेम छिपाया ना छिपे, जिस घट प्रगट होय।
जे बी मुख ना बोलिये, नैन देत है रोय।।

विदुर की स्त्री भगवान की तरफ देखकर भोजन तो किया। परन्तु नमक तो डाला नहीं। भूल गई। भगवान उधव खाने लगे तो उसमें नमक था ही नहीं। नमक के बगैर खाकर देखो तो पता पड़े। भगवान कहता है – हे विदुर। तेरी स्त्री कहां से भोजन सीख के आयी है। ऐसा खाना मेरे को राधा ने नहीं रूकमणी ने खिलाया है। जन्म से खाय नहीं है। ये भोजन कहां से सीख के आयी है। मीठा है। नमक था ही नहीं। आखिर खाया, साहब और स्त्री ने देखा। नमक था ही नहीं,। को रोना आया, स्वामी हमको माफी दो। तेरे क्यों? यह है प्रेम। हे प्रभु अगर आप प्रसन्न हो घंटी बजाने के लिए भी तैयार हूँ।

कह टेऊँ सो करूं सद्वारी, जिसमें होवें रूचि तुम्ह
करूं सद्वारी, जिसमें होवे रूचि तुम्हारी।
मौन हो जाऊं वां तेरा गुण गाऊं, हरि गुण गाऊं।
कींअ रिझाया तोखे कीअं परचाया।

"कह टेऊँ सो करूं सद्वारी" गुरू महा श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के भजनावली में लिखा है हजार बार करूं। "जिसमें होवे रूचि तुम्हारी। प्रभु जिसमें आप खुश हो चुप करके बैठ, एकान या तेरे गुण गायें। प्रभु अन्तर्यामी कोई मेरे को र बतायें। एक भजन है एक प्रेमी ने बताया। व बहुत अच्छा है समय आकर के हुआ है। प्रभु तेरे कैसे रिझाऊं। भगवान को रिझाया तो सारे संसा रिझाया। भगवान रूठा तो सारा संसार रूठा। पर बिगड़ गया। जितने प्रेमी बैठे हों भगवान किस प्रसन्न होता है। प्रेम, विश्वास, प्रार्थना, त्याग प्र को बताना, चूड़ाला कहती है – हे राजन्। तूने तो मूर्खता की है। दूसरा ब्रह्मज्ञान को त्याग है। और तूने सर्व त्याग नहीं किया। ब्रह्मज्ञा जन्म–मरण का फेरा मिट जायेगा। त्याग से आनंद होगा। इतना सुनकर राजा शिखरध्वज में कहने लगा– वैसे तो मेरे घर की बातें करत मैं त्यागी हूं पर उसको खोलकर बताऊं। यह इधर रखते हैं। जो चार वचन सुने हैं। वो अपने को बताना और समय से सत्संग में आओ।

–ज्योति
मालवीय नगर, ज

इन्दौर आश्रम में नया फोन

इन्दौर में काटजू कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊ प्रेम प्रकाश आश्रम में नया फोन लग गया जिसका नम्बर इस प्रकार है–0731–300140, इ प्रेमी अपने पास नोट कर लेवें।

सद्गुरु सर्वानन्द प्राकट्य दिवस पर विशेष प्रसंग कैसेट प्रवचनों से उद्धृत

पूज्यपाद सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के श्रीमुख से निःसृत पावन प्रसंग

एक बार सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ सन्त विनोबा भावे के यहाँ जाना हुआ, सत्गुरु महाराज जी उस समय लाल धाम पर आकर रहते थे। हम उस समय वहाँ पास के एक शहर कामठी में एक विवाहोत्सव में आये हुये थे तो महाराज जी भी वहाँ पर पधारे।

वहाँ से हम फिर विनोबा भावे जी के यहाँ आये। उस समय चार सिन्धी कन्यायें भी वहाँ सेवा में हाजिर थीं। सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी कि तुम ये ये प्रश्न विनोबा भावे से पूछा। तीन–चार बातें पूछीं, परन्तु मैं यहाँ एक बात बताता हूँ।

महाराज जी की आज्ञा से मैंने विनोबा जी से पूछा – कि ये संसार किसके आधार पर एक–दूसरे से जुड़ा है? वो कौन सी कला है।

उस दिन विनोबा जी का मौन था। लेकिन उन्होंने हमारे प्रश्नों का उत्तर लिखकर के बताया कि – वो "प्रेम" ही है ज़ो एक–दूसरे को जोड़े हुए है।

आगे उन्होंने बताया कि अगर यह "प्रेम" नहीं होता तो कोई किसी का मुंह ही न देखता। कोई किसी के यहाँ आये भी नहीं कोई किसी से बोले ही नहीं।

अरे यह प्रेम ही तो संसार को आश्रय दे बैठा है। एक–दूसरे से जोड़ के रखा है।

तो भाई ऐसा ही समझो। यदि प्रेम न हो तो कोई किसी को अच्छा लगे ही नहीं।

साईं शांति कैसे मिलेगी

एक बार किसी जिज्ञासू ने हमारे सत्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज से सत्संग में पूछा कि– साईं आप जो शांति, शांति की बात करते हो परंतु यह शांति आयेगी कैसे?

स्वामी जी ने उत्तर देते हुये उस जिज्ञासु से कहा– भाई शांति आएगी शांत रहने से।फिर स्वामी जी ने आगे उनसे कहा–

शांति चाहो तो शांति करहो। सुख चहो तो दुख न डरहो। जीना चहो तो जीते मरहो। मान चहो तो मान को हरहों। कहे टेऊँ यह उलटा फेरा। सत्य वचन यह मानो मेरा। इस में कोई संशय नाहिं। निश्चय धर यह उरके मांहिं।

महाराज जी के इतना कहने के बाद वहाँ पर दूसरे एक संत भी विराजमान थे फिर उन्होंने भी इसी बात की पुष्टि करते हुये आगे कहा कि– इच्छाओं का त्याग ही मन को शांत करता है। संतों की व स्वामी जी की ऐसी वार्ता सुनकर सभी प्रेमी प्रसन्न हुये।

घर–घर में स्वामी जी का यश

अभी हम स्पेन गये, वहाँ के प्रेमियों में इतना प्रेम था जो कहने से बाहर है। विदेश में रहकर में भी गुरू महाराज जी के प्रति इतना स्नेह, यह सारी कृपा हमारे स्वामी सर्वानंद जी महाराज की है।

स्वामी जी घर–घर में जाकर प्रेम प्रकाश मण्डल का यश ऊंचा करके आये। वहां घर–घर में सत्गुरू टेऊँराम जी महाराज का फोटो था।

हमारे सत्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने वहां जाकर ऐसा प्रेम जगाया जो आज तक प्रेमियों के हृदय में स्वामी जी की यादगिरी है। ऐसे महापुरूषों को भाई सारी दुनियाँ नमस्कार करती है जो अपने गुरू का, अपने मण्डल का यश बढ़ायें।

–संकलन–प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा

सद्गुरू सर्वानंद जन्मोत्सव पर विशेष

फक्कड़ फकीर सद्गुरु सर्वानंद जी महाराज

पूज्य स्वामी धर्म प्रकाश जी महाराज, बड़ौदा

प्रस्तुत प्रवचन धर्मवाणी कैसिट से लिये गये हैं। प्रस्तुत प्रवचन पूज्य स्वामी जी द्वारा एक विशेष समारो में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के परमादर्श जीवन पर अपनी सरल वाणी द्वारा व्यक्त किये गये हैं, आश है हम सभी इन प्रवचनों से लाभान्वित होंगे–सम्पादक

कव्वाली :

थलुः–स्वामी सर्वानंद सत्गुर, वाह जा कई फकीरी।
वाह जा फकीरी, दिल सां छदि॒याऊं अमीरी।।

1. **फाकिया कढी विया तन खे, मारे छदि॒याईं मन खे।**
हुयो मोह कोन धन से, सुहणी हुई सबूरी।।
2. **हुयो यार में यकीनो, दिल भी कढियाईं कीनो।**
साहे न कद॒हें सीनो, पंहिंजी कयाईं पीरी।।
3. **सम में हुई किनायत, आयल लइ हुई इनायत।**
साईअ में हुई सखावत, दिल में न हुई दिलगीरी।।
4. **वैराग॒ी राग॒ गा॒ये, वियो मौज का मचाये।**
सत्गुर जो जसु वधाये, मुलके कयऊं मशहूरी।।
5. **"धर्मदास" कहिं सुञातो, हिन मर्द खे हो जा॒तो।**
रखी जहिं नींह नातो, हाजुर दि॒ठाईं हजूरी।।

प्रेम से बोलो सत्नाम साक्षी!

फकीरी करना अत्यंत कठिन है। सारी तृष्णाओं को समूल नष्ट करना पड़ता है। जैसे सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने पूर्ण फकीरी की, उनकी फकीरी कैसी थी– कभी भी उनकी जेब से एक चवन्नी तक नहीं निकली थी यानी हाथ तक नहीं लगाते थे पैसों को।

महर्षि स्वामी सर्वानंद जी महाराज– उनका जीवन कैसा था खाने पर नियंत्रण। रूपया सवा रूपया वाली पैरों में जुती (चप्पल)! भोजन भी कैसा– चार–पाँच कोर मतलब आधा फुलका या उससे थोड़ा ज्यादा खाया, बस इसमें आनंद।

फाकिया कढी वियो तन खे–मारे छदियाऊँ मन खे।

फाकिया कढी–यानी जैसे व्रत नियम। आपके व्रत नियम किसी विशेष दिन रहते हैं परन्तु स्वामी जी का तो सतत् व्रत नियम रहता था।

हुयो मोह कोन धन सां

मैं मनीला (बैंकॉक) गया था। वहाँ गेनाराम दादलानी गुरू महाराज के प्रेमी रहते हैं, कहते हैं मुझसे– महाराज। स्वामी जी (सद्गुरू सर्वानंद) जब यहाँ पर पधारे थे तो हमने साईं हरिदासराम जी को दस हजार रूपये दिये थे, परन्तु उन्होंने कहा इसे आप यहाँ रख दो हम कभी फिर मंगवायेंगे। फिर मैंने जयपुर पत्र लिखकर पूछा कि अब यह दस ह आपको कब भेजूँ? तो जवाब क्या भेजा.........

यह गेनाराम दादलानी मनीला वाला बड़ा करोड़पि उद्योगपति है। यह उनके ही शब्द हैं–

पूछा, स्वामी जी से कि महाराज जी, वो दस हजार उसका क्या करें? अथवा उसे आपको जयपुर कैसे भेजें? च मनीला आजाद देश नहीं है। हांगकाँग है, सिंगापुर है। प मनीला इतना स्वतंत्र नहीं है। वहाँ पैसे ऐसे निकालने नहीं हैं। तो स्वामी जी आपको किस प्रकार वो दस हजार भेजें? महाराज जी ने कौन सा जवाब भेजा– कि जो यहाँ गरी अभाव ग्रस्त हैं वो दस हजार रूपये वहाँ बांट दिये जायें, ३ जयपुर भेजने की जरूरत नहीं है। यह गेनाराम दादलानी ही शब्द हैं।

हुयो मोह कोन धन से – सुहणी हुई सबूरी।

सबुर और शुक्र! जो अभी आपको शास्त्री (हेमनदास बताया। अत्यंत सबुर (धैर्य) अत्यंत सहनशीलता। ऐसी कोइ नहीं रख पायेगा। कोई भी भारत का संत, यह चैलेन्ज है म कोई भी ऊँचा बोल जाये लेकिन ....।

एक बार हरिद्वार आश्रम पर एक बड़ी देग की जर थी। स्वामी जी ने कहा भाई यहाँ जयपुर से उठा कर भेज यहाँ पर वैसे भी ज्यादा पड़ी हुई हैं। फिर प्रेमी आज्ञा पाकर भंडार में गया वहाँ सत्यप्रकाश जी से कहा कि एक देग जरूरत है हरिद्वार आश्रम पर, स्वामी जी ने आज्ञा दी है कि से एक देग वहाँ आश्रम पर भेज दें।

इस पर सत्य प्रकाश ने कहा– यहाँ ज्यादा बादा हैं। स्वामी सर्वानंद अपने हुक्म चलाते हैं क्या? कहो ज उन्हें कि हरिद्वार के लिये दूसरी नई मंगवा के दें।

स्वामी जी को इस बात का पता चला तो मन में विक्षेप नहीं हुआ और तो और उसे बुलाकर कुछ कहा तक कि यह क्या कहता है? हम मालिक बैठे हैं। इसमें तुम्हारा कहने का क्या मतलब? बिल्कुल नहीं।

जब प्रेमी ने आकर ऐसा कहकर सुनाया कि स्वामी वो तो उठाने नहीं देते और ऐसे कहते हैं। इस पर महाराज

ने कहा—अब अच्छा छोड़ दो नहीं देते हैं, तो कोई बात नहीं, दूसरी लेकर भेजते हैं।

अरे—इससे अधिक और दूसरा सबुर कौन सा? छोटे हो करके बड़ों के आज्ञा को ठोकर मारें और बड़े एकदम शांत रहें इससे अधिक और दूसरा धैर्य का उदाहरण दुनियाँ में कहाँ होगा।

हुयो मोह कोन धन से – सुहणी हुई सबूरी।

हुयो यार में यकीनो— दिल मां कढियाईं कीनो।

दूसरा क्या था— प्रतिदिन, सत्संग में कैसे भी सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का प्रसंग जरूर उठाते थे। स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्म शनिवार के दिन हुआ था। अतः शनिवार के दिन व्रत (उपवास) रहता था। शनिवार के दिन ना ही बोलते थे और ना ही भोजन लेते थे। यानी मौन व्रत भी रखते थे और साथ—साथ में उपवास भी रखते थे। इससे एक दिन पूर्व शुक्रवार को कहते थे कि भाई जिसे जो काम है अथवा बात करनी है वो मिलकर जांयें, कल फिर हमसे कोई भी नहीं मिले। अर्थात् बड़ों के लिये इतना आदर व प्रेम था और भजन—सत्संग में महाराज जी की महिमा की एक दो पंक्ति अवश्य ही कहते थे—

"हुयो यार में यकीनो—दिल मां कढियाईं कीनो।"

"कीनो" नाम है द्वेष का। किसी के लिये भी आपके पास द्वेष नहीं था।

साहे कढियाईं सीनो— कभी—कभी कहते हैं न अरे यह काम तो मेरा है। यह काम तो हमारे हैं। ऐसी भाषा का कभी भी जीवन में उपयोग करते हुये नहीं देखा। ऐसी लबाड़ी कभी नहीं बोलते थे। कई सिद्धियाँ देखीं अब उन सिद्धियों की महिमा देख रहे हैं कि यह सारी महिमा उस महिमावंत महापुरूष की है।

सभ में हुई किनायत।

कपड़े कैसे हैं पुराने हैं कि फटे हुये हैं इस तरफ देखते तक नहीं थे। जुती (जप्पल आदि) भी कई जगह से टूट फूट जाती थी, लेकिन उसे छोड़ने का ध्यान तब जाता जब देखते कि अब वस्तुतः यह उपयोग लायक नहीं रही तभी जाकर दूसरी नई पहनते थे। जिसे अपनी किनायत नहीं वो दूसरे का ख्याल कैसे करेगा?

आयल लइ हुई इनायत।

अतिथियों के लिये मन में अत्यंत आदर व प्रेम रहता था। कोई अचानक आ जाता तो कहते— बहुत अच्छा आप आये पहले भोजन करो। फिर किसी को आज्ञा करते कि "अबा" इसे बिस्तरा वगैरा दो। "अबा" – ज्यादातर इसी शब्द का उपयोग करते थे। अबा, इसे आसन वगैरा दो और भोजन खिलाओ।

साँईंअ में हुई सखावत।

दूसरों के उपकार के लिये हमेशा तत्पर रहते थे। दूसरों के देने के लिये कैसा भाव था— अरे भाई मथुरादास 50 बोरी अनाज की लेकर ग्वालियर के दरिद्रों की सेवा हेतु बांट दी जायें। फलां मल इससे अनाज लेकर फलाने स्थान पर बांट आओ। दरिद्रनारायण की सेवा के लिये बड़े उदार हृदय से देते थे।

सांईंअ में हुई सखावत— दिल में न हुई दिलगीरी।

कभी भी कोई गम या चिंता नहीं थी। यदि किसी के पास कोई साधन न हो तो वह ऐसे ही काम निकाल लेता है। साधारण रूप में रहकर के वो बात एक अलग है और यदि सब साधन सुविधा हो फिर वह ऐसा साधारण रूप में रहकर जीवन को चलाये सच्ची बात तो वो ही है न?

स्वामी जी को विदेश यात्रा के दौरान ऐसी—ऐसी वस्तुएँ मिली व ऐसे—ऐसे कपड़े मिले जिनके एक मीटर का मूल्य 400—500 रू. था लेकिन एक इंच भी उस विदेशी वस्तुओं व कपड़ों का जीवन में इस्तेमाल नहीं किया।

अमेरीका में अपने पलवल के एक डॉक्टर दम्पति रहते हैं वे लोग 6 कम्बल लेकर स्वामी जी को देने के लिये ले आये जिसकी कीमत ही 3—3, 4—4 हजार रूपये थी, आकर स्वामी जी ने कहा भाई यह यहां किसी जरूरतमंद को दे देवें। हम कहां इन कम्बलों को लेकर घूमते रहेंगे।

ऐसे कई कपड़े वस्तुएँ मिली, परंतु उन सभी को आम के भले के काम लगा दिया, उन कपड़ों आदि में से एक रूमाल तक को अपने काम में नहीं लिया। यह क्या है? हजारों के हजारों मीटर कपड़ा मिला एक मीटर नहीं, परंतु हजारों मीटर कपड़ा आदि मिला लेकिन विदेश की एक भी वस्तु को छुआ तक नहीं। यहाँ का ही मोटा खादी कपड़ा था, जिसका स्वामी जी बस वो भी शरीर मात्र के लिये उपयोग करते थे।

वैरागी राग गाये

क्या इनके राग में आनंद था? क्या बतायें? बार—बार वो ही वाणी गाते थे फिर भी संगत को अद्भुत आनंद मिलता था। फिर हमारे संत कोई—कोई कहता था कि यह तो कल भी भजन गाया था, चूंकि उस समय उन्हें इस बात का एहसास नहीं था, अब उनके पीछे वो ही संत, उन्हीं भजनों को गा रहे हैं, परन्तु उस समय कोई—कोई ! ऐसा मैं नहीं कह रहा हूँ कि सभी संत, कोई—कोई तो व्यंग्य करते थे कि यह तो अभी कल ही तो गाया था कि **"मुंहिंजा मन, मुंहिंजा मन।"** ऐसे व्यंग्य करते थे, स्वामी जी सभ सुनते थे, परन्तु करूणावश किसी को कुछ कहते नहीं थे। ऐसी बातें आज स्मरण में आ रही हैं। सहनशीलता की हद कितनी थी— अरे उल्टा भी चलें, मन माना हम चलें लड़ें भी हम, फिर देखो परचाने के लिये भी स्वयं आते। ऐसा कोई गुरूदेव होगा दुनियाँ के अंदर?

वैरागी राग गाये— वियो मौज का मचाये

जब भी सत्संग में आकर बैठते, सभा एकदम शांत यानी वे सभाजित थे। कोई भी साधू—संत सत्संग वगैरा करता तो शोर

बंद नहीं कर पाता, परन्तु जैसे स्वामी जी आसन पर विराजमान होते थे, सभा एकदम शांतरूप में परिवर्तित हो जाती थी अर्थात् सभा को शांत प्रदान करने वाले स्वामी सर्वानंद जी महाराज़ थे।

सत्गुर जो जसु वधाये

सारी दुनियाँ के अंदर, ओ दूर सदूर स्पेन तक भी गुरू महाराज के जस को पहुंचाया। स्वामी जी के काल में वहां मंदिर बन गया था और हांगकांग में भी– अभी दास वहां पर मंडली बनाकर आया है। वहां भी प्रेमियों ने माया एकत्रित करके मंदिर स्थान लिया है वहां भी रोज सत्संग हो रहा है। हमारे एक साध को वहांरखा गया है। सारे विश्व के अंदर आनंद प्रदान कर दिया।

मुलके कयऊं मशहूरीं–यह नई कव्वाली आपको सुनाई आज।

धर्मदास कहिं सुञातो – हिन मर्द खे हो जातो– किसी–किसी ने उन्हें पहचाना। इन्हें पहचानने वाले बहुत कम लोग है। पहचानना यानी स्वामी जी के अंदर क्या–क्या है? सव मामा आनंद रूप। परन्तु स्वामी जी क्या–क्या थे, कि आपके अंदर भक्ति थी, कितना गहन विवेक था कितनी अ शांति थी, कहां तक धैर्य था, कितनी फकीरी थी, कितना वि त्याग था, कितना वैराग्य था – यह सभी जानने वाले कम

रखी नींह जहिं नातो– हाजुर दिठाई हजूरी

और सत्गुरू स्वामी सर्वानंद जी से उन्होंने प्यार हृदय का संबंध रखकर के पहचाना कि यह संत, यह फ ईश्वर का अवतार है। भगवान का अवतार है।

संकलन–प्रेम प्रकाशी दिलीप, ब

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य (सूची)

1. **श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**
   हिन्दी में 301/– सिन्धी में 151/– गुरुमुखी में 501/–
2. **अमरापुर वाणी (भजन संग्रह)**
   हिन्दी में 30/– सिन्धी में 30/–
3. **ब्रह्म–दर्शनी**
   हिन्दी 10/– अंग्रेजी 50/–
4. **साक्षी–दर्शन**
   हिन्दी 2/– अंग्रेजी 2/–
5. **वामन बली** हिन्दी 5/–
6. **चूड़ाला शिखरध्वज** हिन्दी 5/–
7. **अमरापुर दर्शन** हिन्दी 5/–
8. **यमराज नचिकेता** हिन्दी 5/–
9. **सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज (जीवन चरितामृत)**
   हिन्दी 125/– (चारों भाग)
   अंग्रेजी 60 रूपये (दो भाग)
   सिन्धी 100/– (दो भाग)
10. **गुरु आराधना (सद्गुरु टेऊँराम महिमा भजन**
    हिन्दी 10/– सिन्धी 10/– अंग्रेजी 10/–
11. **अमर कथा** हिन्दी 5/–
12. **प्रार्थना** हिन्दी 10/–
13. **कवितावली–छन्दावली** हिन्दी 2/–
14. **प्रेम प्रकाश दोहावली** हिन्दी 2/–
15. **स्वामी सर्वानन्द सन्देश** हिन्दी 25/–
16. **सद्गुरु टेऊँराम चालीसा**
    (छोटी पुस्तक) हिन्दी 1/–
17. **प्रेम प्रकाश सन्देश**
    (हिन्दी मासिक पत्रिका) वार्षिक शुल्क रूपये 50/
18. **सत्नाम साक्षी संदेश**
    (सिंधी त्रैमासिक पत्रिका) वार्षिक शुल्क 150/–.
19. **अमरापुर संदेश**
    (अंग्रेजी त्रैमासिक पत्रिका) वार्षिक शुल्क 200/–

प्राप्ति स्थल

श्री अमरापुर स्थान एम.आई.रोड. जयपुर, एवं प्रमुख अन्य सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है। फोन : 0141–372424–3724

सद्गुरु सर्वानन्द संदेश

जिसने आत्मतीर्थ किया है उसने चारों धाम कर लिये और सारे तीर्थ नहाय लिये।

भगवान के बगीचे में आपको घूमने का अधिका है, फल फूल शाखा तोड़ने का नहीं।

१०६ वें जन्मोत्सव पर विशेष

परम वीत राग साधना संपन्न महर्षि सद्गुरु सर्वानंद जी महाराज

ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलंमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरूं तं नमामि।।
सर्वानंद प्रदातारं, सर्वानंद विकासकम्।।
सर्वानंदावितारंच सर्वानंदं नमाम्यहम्।।

हमारे परम गुरूदेव आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की अनुभवी वाणी में एक जगह लिखते हैं– "मैंने देखा कि स्वांग (कोई भी बाहरी वेश) बनाना बहुत सरल है और इस कृत्य को कोई भी कर सकता है, परन्तु मैं जानता हूँ कि फकीरी (परमात्मा की सच्ची भक्ति) करना अत्यंत कठिन है।"

किसी ने सत्गुरू शांति प्रकाश जी महाराज से कहा कि आप संतों को क्या है, आपको तो सब कुछ ऐसे बैठे–बैठे ही मिल जाता है, आपको तो इसके लिये कोई परिश्रम करना ही नहीं पड़ता है।

महाराज श्री ने मुस्कराकर उस प्रेमी को अपने निकट बुलाकर कहा– अच्छा तुम्हें भी ऐसे संतों जैसे बैठे–बैठे सब कुछ मिल जायेगा, परन्तु तुम एक काम करो।

बोले– कौन सा?

महाराज श्री ने कहा– तुम यहाँ एक घंटे तक बैठो और जैसे मैं कहूँ वैसे करना।

उस प्रेमी ने कहा– इसमें कौन–सी बड़ी बात है लो बैठ जाता हूँ! महाराज श्री ने कहा लेकिन ख्याल रखना जैसे कहूं वैसा करना।

बोले– हाँ!

अच्छा– वो प्रेमी भी वहीं महाराज श्री के निकट बैठ गया। अब महाराज श्री ने उसे पहले बैठने की विधि बताई, वो प्रेमी महाराज श्री के कहे अनुसार पद्मासन लगाकर एकाग्रचित्त होकर बैठ गया।

अब बैठ तो गया लेकिन दस मिनट के बाद उसके शरीर में उथल–पुथल हो गई, अब बेचारा क्या करे? इधर–उधर होने लगा। इतने में महाराज श्री को आभास हो गया और उसे सावधान करते हुये कहा– खबरदार, मैंने आपको एकाग्र होकर बैठने के लिये कहा जैसे मैंने कहा है वैसा करो। फिर वो प्रेमी थोड़ा सावधान होकर बैठ गया।

थोड़ी देर चुपचाप बैठने के बाद पुनः वो पहले की भांति ऊपर नीचे होने लगा। महाराज श्री ने भी उसे पुनः सावधान करते हुये कहा– देखो भाई जैसे मैंने आपको बैठने के लिए कहा है वैसे तुम नहीं कर रहे हो बार–बार ऊपर–नीचे हो रहे हो, एकाग्र होकर बैठो।

एक बार–दो बार तीन बार उसे ऐसे सावधान किया। अंततः वो गुस्से में आकर महाराज श्री से कहता है– लो मैं जा रहा हूँ मेरे से ऐसे एक घंटे तक नहीं बैठा जाता। अरे इतने में ही मेरा दम निकल गया। यह काम तुम संत लोगों का है हमसे नहीं होगा।

महाराज श्री कृपा के सागर उस प्रेमी को प्यार से समझाते हुये कहा– प्यारे यह तुम्हारी उसी बात का उत्तर है जो तुम कह रहे थे कि संतों को क्या है उन्हें तो बैठे–बैठे मिल जाता है। अब आपको मालूम पड़ा कि संतों को बैठे–बैठे मिल जाता है या कुछ करते–करते?

अरे नहीं! संत दुनियाँ से लेते कम हैं किन्तु वे देते इतना हैं कि– **"देंदा दे लेंदे थक जाया।"**

संत ऐसे बैठे–बैठे नहीं खाते वो तो बहते–बहते खाते हैं।

कहने का अभिप्राय है कि संतों का मार्ग अत्यंत कंटक पूर्ण यानी खण्डे की धार की तरह होता है। इसलिये गुरू महाराज जी लिखते हैं कि फकीरी करना कोई खिलौने का खेल नहीं, इसके लिये तो संसार के सारे वैभव को बिल्कुल दर किनार कर मन में केवल प्रभु परमात्मा के अतिरिक्त और कोई इच्छा ही नहीं हो और सपने भी इस प्रकार आकर्षण न हों ऐसा जो वीतरागी व साधना संपन्न हो जाता है वो ही फकीरी कर सकता है। बाकी फकीरी

कोई खिलोने का खेल नहीं इसके लिये तो पूरी साधना और वैराग्य चाहिये, तब जाकर कहीं सफलता हाथ आती है।

ऐसी कठिन साधना के साधक, परम वीतराग त्यागमूर्ति सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज जिनका साधनामय जीवन दर्शन साधना मार्ग के साधकों के लिये अत्यंत प्रासंगिक है। आइये थोड़ा चिंतन करें।

वस्तुतः इस जीव का परम लक्ष्य क्या है?

सर्वदुखों की निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति ! यही इस जीवन का लक्ष्य है परन्तु सामान्यतः मनुष्य इतना विषयागामी होता है कि वो अपने इस असली लक्ष्य को भूलकर मात्र निद्रा, भोजन, भोग आदि में सुख मानकर उसी में लिप्त रहता है जिसके फलस्वरूप वह जन्मान्तरों तक आवागमन के चक्कर को काटता रहता है।

लेकिन इसके विपरीत जो चेतन पुरूष हैं जो ऊर्ध्वगामी हैं वो संसार के किसी भी असार आकर्षण में न फंसकर अपनी ऊर्जा को उस वास्तविक लक्ष्य पर केंद्रित कर, इन्द्रियों को विषयों से बचाकर किसी ब्रह्म वेता महापुरूष की चरण–शरण में रहकर अपनी कठिन साधना द्वारा उस परम लक्ष्य को प्राप्त कर सदैव के लिये अमर बन जाते हैं।

एक बार पुनः हम इसी बात को अविभाजित भारत के सिन्ध प्रदेश के छोटे से ग्राम भिट्टशाह में 1897 ई. में पूर्ण हुआ पाते हैं, जब स्वामी सर्वानंद जी महाराज ने भक्त शेवकराम व माता ईश्वरी देवी के घर जन्म लिया।

यह भी एक सुंदर योग था कि सिंधु देश के महान संत आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज, पूज्य स्वामी के सांसारिक रिश्ते में मामा लगते थे। छठी के दिन ही स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने बालक सर्वानंद का परम तेजस्वी मुखमण्डल देखकर यह भविष्यवाणी कर दी थी कि यह संसार में उलझने के लिये नहीं आया है यह तो उस परम सत्य का पिपासू होगा और आगे चलकर यह बात सोलह आना सत्य निकली।

बचपन से ही पूज्य स्वामी जी को सांसारिक कार्यों से अरूचि हो गई। फलतः उनका मन बाह्य जगत से पूर्णतया विरक्त हो गया। अब उन्होंने अ
असली लक्ष्य यानी आत्म साक्षात्कार को प्राप्त क
का निश्चय कर लिया। इसी सत्य संकल्प
केन्द्रित कर, तीव्र वैराग्य भाव से उत्तप्त, आसक्ति
अंतिम बंधनों को छिन्न करके टण्डे आदम अम
स्थान पर उस रेत के टीले पर पहुंचे और वहाँ उ
आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
शिष्यता ग्रहण की।

दीक्षा के पश्चात् गुरूदेव से आज्ञा पाक
अपने जीवन के असली लक्ष्य की दिग्विजय यात्र
निकल पड़े। इसी खोज में विचरण करते–क
पूज्य स्वामी जी ऋषिकेश, उत्तराखंड के अन्य हिमा
क्षेत्रों के साधना स्थलों पर कई वर्षों तक क
साधना की।

साधनाकालः– पूज्य स्वामी जी ने अधिकतर स
ऋषिकेश की सघन झाड़ियों में की। पूज्य स
जी साधनाकाल के दौरान अत्यंत वैराग्यपूर्ण अव
में रहते थे। सप्ताह में एक बार ऋषिकेश से
हरिद्वार आते थे और वहीं अन्नक्षेत्र से भिक्षा
पुनः ऋषिकेश वापस उन झाड़ियों में चल देते
भूख लगती तो उस सूखी रोटियों में से एक
रोटी लेकर फिर उस पर गंगा जल का
लगाकर क्षुधा तृप्ति करते, बस यही सारे दिन
आहार रहता था। इसके बाद पुनः भजन में ली
जाते थे। ऐसे कई वर्षों तक गुरू मंत्र की क
साधना द्वारा अभ्यास करके आपने उस परम
को प्राप्त कर लिया।

त्याग–वैराग्य की आदर्श मिसालः– पूज्य स
जी के जीवन में वैराग्य कूट–कूटकर भरा हुआ
उनके जैसी आदर्श मिसाल अत्यन्त दुर्लभ है। ज
में किसी भी चीज के संग्रह की इच्छा तक नहीं
पूज्य स्वामी जी स्वयं मुखारबिंदु से सत्संग प्रवच
फरमाते थे कि– **"सची करे पूछो तो हमारा मन
गंगा के किनारे भजन करने का होता है। ये आश्रम
बस गुरू महाराज जी की सेवा समझकर थोड़ा बहुत
रखना पड़ता है वरन् हमें गंगा का किनारा ही
लगता है।"**

जब स्वामी जी विदेश भ्रमण पर गये तो

साथ तीन जोड़ी कपड़े ले गये एक जो पहना हुआ बाकी दो अन्य जोड़े झोले में डाल कर गये। कहते हैं जब वहां से वापस आये तो देखा गया कि मात्र दो घघे शरीर पर ओढ़ने के लिये काम लाये। बाकी तीसरा ज्यूं का त्यूं नया का नया वापस ले आये।

अमेरीका में किसी प्रेमी ने पूज्य स्वामी जी को उसी जमाने के सबसे उच्च क्वालिटी के कम्बल दिये ओढ़ने के लिये, स्वामी जी ने कहा, आपने दिये हमने स्वीकार कर लिये अब एक काम करो यह कम्बल यहीं किसी जरूरत मंदों को दे दो, हम कहां इन कम्बलों को लेकर घुमाते फिरें।

थाइलैण्ड में एक सेठ ने पूज्य स्वामी जी को दस हजार रूपये भेंट किये, स्वामी जी वह दस हजार वहां थाइलैण्ड में रखकर आये बाद में वहां से उस सेठ ने फोन करके पूछा कि महाराज जी वो दस हजार आपको कैसे भेजूं और कहां भेजूं? इस पर महाराज जी ने उत्तर देते हुये उस सेठ से कहा, यहां पर हम जिस गरीब बस्ती में चल रहे थे वो दस हजार उन गरीबों को यथा हिसाब बांट दो। इधर भारत पैसे भेजने की जरूरत नहीं है। यह पैसे यहीं गरीबों की सेवा में लगा दो।

ऐसे और कई उदाहरण पूज्य महाराज जी के जीवन में मिलेंगे जो अपने आप में एक से एक अद्भुत हैं।

ऐसे महापुरूषों का जीवन मात्र परउपकार के लिये होता है न कि अपने सुख के लिये।

अब आवश्यकता इस बात की है कि हम ऐसे पवित्र जीवन का चिंतन करें। यदि बार–बार चिंतन करेंगे तो सम्भव है हमारा चरित्र चमक जायेगा।

गुरू महाराज हम सभी को ऐसी शक्ति व सुमति प्रदान करे जिससे हम भी अपने इस देव दुर्लभ मानव जीवन की कद्र कर उसे वास्तविक सुख की तरफ अग्रसर करें जिससे हम भी अपने जीवन को उपयोगी बना सकें।

आओ इस पावन अवसर पर ऐसा शुभ संकल्प लें जिससे हमारा जन्मोत्सव मनाना भी सार्थक हो जाये। चूंकि सत्गुरू सर्वानंद जन्मोत्सव मनाने का कुल कारण भी यही है।–**प्रेम प्रकाशी दिलीप, बड़ौदा**

स्वप्निल सत्य

प्रातः स्मरणीय, परम वंदनीय, परम श्रद्धेय सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज के पावन जन्म दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करने हेतु एक सच्ची कथा सुनाने का प्रयास करना चाहती हूँ।

एक बार 14–15 वर्ष की आयु में मन में कोई अजीब सी इच्छा उठी। यह जानते हुए भी, कि हस्ती के आगे मस्ती नहीं करनी चाहिये। पर बाल सुलभ मन कब मानता है। मैं हठ करके रातभर गुरूजी स्वामी सर्वानंद जी महाराज की तस्वीर के आगे नाम जपती रही, अपने सवाल का जवाब पाने की आस में। न जाने कब नींद आई पता ही नहीं चला।

सत्गुरू तो दया के सागर हैं वे भला भक्तों से कब मुंह मोड़ने वाले हैं। सपने में प्रभु परमात्मा पधारे, मुझे समझाया कि इतनी बड़ी–बड़ी बातें नहीं करते हैं अभी तुम छोटी हो। अब ये अवसर का प्रभाव ही कहेंगे, मैंने उनसे कहा मुझे कुछ ज्ञान की बातें कहिए पर जो सरल हों अपना बुद्धि व आयु के अनुसार अमल कर सकूं। उनके मुखारबिंदु से जो वचन निकले वे थेः–

1. जो चीज मिल न सके उसकी तमन्ना कैसी।
2. ये संसार व्यर्थ है।
3. प्रभु सिमरन सबसे ऊंचा, आशीर्वाद देकर कहते हैं अब तो बस ये तो कठिन नहीं हैं।

गीतः– **होंठों से छू लो तो मेरा गीत अमर कर दो।**

प्रभु हमपे दया करके, चरणों में जगह दे दो।
प्यारे गुरूवर कृपा करके, अपने नाम का रस दे दो।

1. घूमकर देखी दुनिया सारी, मिला न तुझसा कोई निर्मानी
तेरा दर ना छूटे कभी अब कर ये मेहरबानी।
भले बुरे हम हैं तेरे हर भूल क्षमा कर दो।

2. तुम ही हो पित माता गुरूदेव जीवन दाता।
चाहे दुख दे या सुख दे पर टूटे ना ये नाता।
सांई रोते हुए भक्तों, अपना दर्शन दे दो।

3. हर हाल में सत्गुरू हमपे, करना तू अपनी मेहर।
कभी कोई करें हम भूल, तू न फेरना नजर।
तेरे नाम का करें सुमरन, और श्रद्धा का अमृत दे दो।

कु. लता गिदवानी,
अजमेर

पावन जन्मोत्सवं पर विशेष

गुरु भक्त सद्‌गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज

सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की चरणवन्दना करके उनसे अपने दिल की बात कहने की अनुमति चाहती हूँ पर लिखूँगी कैसे? मेरे पास तो न ही इतने शब्द हैं, न ही इतनी बुद्धि, इस जड़ बुद्धि से मैं उस अविनाशी, अमरापुरवासी, सुखराशी के बारे में क्या लिख सकूंगी। इसीलिए हे सद्‌गुरू महाराज, हे मेरे गुरूबाबा इस दासी की सहायता करना एवं गलतियाँ क्षमा करना।

प्रभु परमात्मा की कृपाओं का हम जितना भी वर्णन करें कम होगा। उन्होंने हमें प्रेम प्रकाशी पंथ में जन्म दिया, जिसके मण्डलाचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज हैं जिन्होंने हमें अपनी लीलाओं द्वारा धर्मोपदेश किया, सिन्ध देश में जहाँ पर धर्म का लोप हो रहा था। वहां पुनः धर्म की स्थापना की, हमें सद्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज दिए, सद्‌गुरू स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज दिए, सद्‌गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज दिए एवं वर्तमान मण्डलाध्यक्ष सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं कई उच्च कोटि के संतों का सानिध्य दिया।

जैसा कि सबको विदित ही है कि जब भी भगवान अवतार लेते हैं तो उनके साथ उनके सहायकगण भी इस धरातल पर अवतरित होते हैं। वैसे तो ईश्वर को सहायता की कोई आवश्यकता नहीं होती पर सेवाभाव के वशीभूत होकर वे भी प्रभु की लीलाओं में शामिल होते हैं। जैसे श्री कृष्ण भगवान के साथ बलराम जी, राधा जी, श्री राम जी के साथ लक्ष्मण जी, सीता जी इत्यादि वैसे ही गुरू महाराज जी के साथ भी तीन और योगियों ने स्वामी ग्वालानंद जी महाराज, स्वामी सर्वानंद जी महाराज एवं स्वामी गुरूमुखदास जी महाराज ने जीवों का कल्याण करने के लिए अवतार धारण किया। यह लेख सद्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज को उ पावन जन्मोत्सव के उपलक्ष में समर्पित है।

सद्‌गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज का जन्म सिंध प्रदेश के भिटशाह नामक ग्राम में हु माता का शुभ नाम श्रीमती ईश्वरीबाई एवं पिता नाम श्री सेवकराम जी था। सद्‌गुरू टेऊँराम महाराज रिश्ते में स्वामी जी के सगे मामा लग पर सत्य तो यह है कि स्वामी जी का गुरू महा के साथ बचपन से ही एक दिव्य एवं अलौकिक था। एक तरफ पूर्ण ब्रह्मज्ञानी सद्‌गुरू और दू तरफ उनका ही अंश रूपी शिष्य, क्या दृश्य होगा जब उनका मिलन होता होगा। जिन्होंने उन गुरू शिष्य की जोड़ी के दर्शन किये होंग धन्य होंगे।

स्वामी जी का अवतार जन साधारण अज्ञानता के अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा लिए हुआ। स्वामी जी ने अपनी करनी रहनी स के द्वारा कई शिक्षाएँ दीं, एक शिष्य की मर्यादाओं कर्तव्यों से अवगत कराया। शिष्य का परम क एवं सेवा होती है– गुरू आज्ञा पालन। स्वामी ज सपने में भी कभी गुरू आज्ञा का उल्लंघन किया। जैसे भरत जी भगवान राम के वनगम पश्चात् प्रत्येक कार्य राम जी की पादुकाओं पूछकर करते थे वैसे ही स्वामी जी भी प्रत्येक अपने मन मंदिर में विराजित सद्‌गुरू टेऊँराम महाराज से पूछ कर करते थे। जैसे भरत अयोध्या के महान ऐश्वर्य को अपना न मानकर राम जी की धरोहर के रूप में दिन रात उसकी करते थे, वैसे ही स्वामी जी भी मण्डलाध्यक्ष हो बावजूद हमेशा अपने आप को गुरू महाराज ज सेवक के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानते थे। भरत जी का रंग रूप बिल्कुल राम जी जैसा

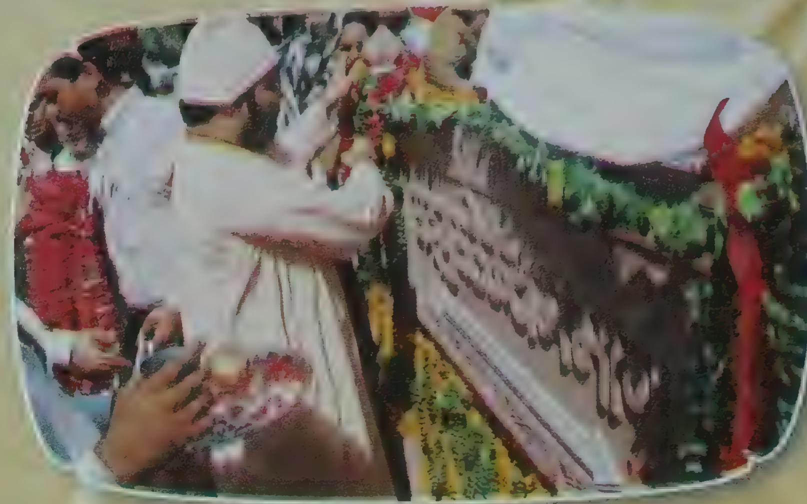

विदेश यात्रा



सद्गुरू स्वामी टेऊँराम पॉली क्लिनिक का उद्घाटन करते हुए सद्गुरू महाराज जी व माननीय शान्ति धारीवाल साथ मे न्यायमूर्ति इन्द्रसेन इसराणी



सद्गुरू महाराज जी अहमदनगर आश्रम में



जयपुर में सद्गुरू टेऊँराम मार्ग का अनावरण करते हुए सद्गुरू महाराज जी



सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 72वाँ जन्मोत्सव व प्रेमप्रकाश आश्रम, बनारस का रजत जयंती महोत्सव (वाराणसी)



दिल्ली में स्वामी जय प्रकाश मार्ग का अनावरण करते हुए सद्गुरू महाराज जी



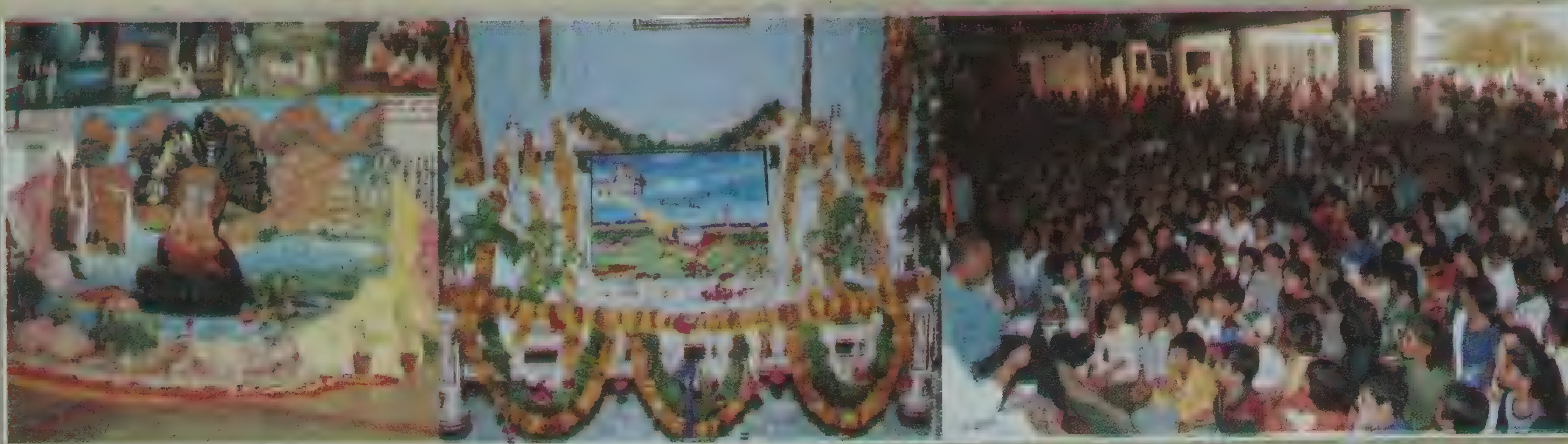
सद्गुरू महाराज पूना आश्रम मे सत्संग करते हुए।



सन्त नरेशलाल जोधपुर आश्रम में सत्संग करते हुए



आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का 116वाँ जन्मोत्सव (श्री अमरापुर स्थान, जयपुर)



जन्मोत्सव पर सजाई गई शेष नाग व झूला झाँकी – पुरस्कार वितरण समारोह



सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का 96वाँ जन्मोत्सव (श्री अमरापुर स्थान, जयपुर)



श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव (श्री अमरापुर स्थान जयपुर)











प्रेम प्रकाश सत्संग भवन
सिन्धी कॉलोनी, साँगानेर (जयपुर)
एवं स्वामी हरिदास राम
कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र,
साँगानेर ब्रान्च का
उद्घाटन समारोह



संत नामदेव अमरापुर स्थान टंडा आदम
सिंध (पाकिस्तान) में



जबलपुर के संत श्री रामदास जी व सद्गुरू महाराज जी

भरतु रामही की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नर नारी।।

वैसे ही हमारे स्वामी जी बिल्कुल गुरू महाराज जैसे ही लगते थे। एक बार मैंने एक अम्मा से, जिन्होंने सिन्ध में गुरू महाराज के दर्शन किए थे, पूछा कि गुरू महाराज कैसे दिखते थे तो साईं सर्वानंद जी की तस्वीर की तरफ इशारा करके कहने लगी कि "सागो हिन वांगुर लगंदो हो"। सच ही है कि हम जिसका ध्यान करते हैं उसकी छवि हमारे चेहरे पर झलकने लगती है। तभी तो संतों महात्माओं में इतनी कशिश होती है कि हर कोई उनकी ओर सहज ही खिंचा चला आता है।

स्वामी जी की सुंदर मनमोहक मुस्कुराती हुई मूरत देखकर सबके दुख सहज ही दूर हो जाते थे, आज भी जब हम उनकी तस्वीर देखते हैं तो दिल में अपार आनंद एवं शांति की अनुभूति होती है।

दर्शन सां दिल ठरे, बाबा तुहिंजे दर्शन सां दिल ठरे,
दर्शन सां दुःख दूर थियनि था, दुर्गति मन जी टरे।

स्वामी जी के बारे में जितना कहें, जितना लिखें, जितना सुनें कम होगा। उनकी प्रत्येक क्रिया जैसे देखना, बोलना, चलना– फिरना, सोना–जागना, खाना–पीना, उठना–बैठना, सुनना–सुनाना सब अद्भुत थीं। **स्वामी जी प्रेम, त्याग, सहनशीलता, निर्मानता, पावनता, वैराग की साक्षात प्रतिमूर्ति थे।** स्वामी गुरूमुखदास जी महाराज ने उनके बारे में लिखा है–

"ज्योति गुरूदेव की निश्चय जानो इसे
धार श्रद्धा सांचा मीत मानो इसे
ये ही टेऊँराम है, ये ही सुखधाम है
ऐसी गुरूमुख दीनी गवाही है।"

स्वामी जी की प्रत्येक क्रिया से उनके अनंत गुण झलकते थे। एक घटना आती है स्वामी जी के जीवन चरित्र में जिसमें स्वामी जी की अत्यधिक **सरलता एवं निर्मानता** दर्शित होती है, साथ ही **सदगुरू में अटूट विश्वास एवं सर्वव्यापकता का एहसास।**

एक बार स्वामी जी सदगुरू महाराज जी से आज्ञा लेकर पंजाब एवं कश्मीर की यात्रा पर निकले। लगभग एक मास तक स्वामी जी कश्मीर में रहे, वहाँ पर एक संत ने स्वामी जी को रावलपिंडी में स्थित रामबाग नामक आश्रम के बारे में बताया और कहा कि लौटते समय वहाँ अवश्य जायें, स्वामी जी ने उनकी बात स्वीकार की एवं दो–चार दिन वहाँ रहकर, सब संतों से विदा लेकर रावलपिंडी के लिए प्रस्थान किया।

बस से उतरकर तांगे से रामबाग के लिए प्रस्थान किया, रात का समय था। रास्तें में एक विशाल मंदिर पड़ा लोगों की बहुत भीड़ थी, सत्संग भी हो रहा था, तांगे वाले ने वताया कि वह देवी द्वारा है। कुछ देर में राम वाग आ गया। स्वामी जी ने तांगे से उतरकर दरवाजा खटखटाया और आवाज भी दी पर अंदर से कोई आवाज नहीं आई। तांगे वाले ने कहा कि रात काफी गुजर चुकी है, सब संत आराम में होंगे, इसीलिए कोई आवाज नहीं देता। यह सुनकर स्वामी जी ने उसको देवी द्वारा चलने को कहा। तांगे वाला स्वामी जी को देवी द्वारा छोड़कर चला गया। स्वामी जी थैला और चादर लेकर देवी द्वारे में आये। बरामदे में थैला रखकर सब मंदिरों के दर्शन कर फिर बरामदे में आकर चादर बिछाकर बैठ गये, इतने में पुजारी ने आकर स्वामी जी को कहा कि महाराज आप यहाँ क्यों बैठे हो? यह जगह साधुओं के रहने की नहीं है, यदि आपको रहना हो तो धर्मशाला में जाकर रहो, जल्दी करो उठो। स्वामी जी ने मुस्कुराकर पुजारी को कहा कि इस समय रात बहुत बीत चुकी है, धर्मशालाएँ भी बंद हो गयी हैं, बरसात भी जोर से आ रही है, इसके सिवा शहर में मेरी कोई जान पहचान नहीं है। इसीलिए यहाँ पर आया हूँ। केवल आज रात यहाँ पर रहने दो, सवेरा होते ही चला जाऊँगा। इतने पर भी पुजारी ने कोई ध्यान नहीं दिया, गुस्से में आकर चिल्लाकर बोला जल्दी करो उठो नहीं तो जबरदस्ती निकाला जाएगा। जोर की आवाज सुनकर दो चार सज्जन जो अभी तक वहाँ बैठे थे आ गये, सारी बात सुनकर पुजारी

को कहा कि यह शायद परदेसी संत है आज की रात यहाँ पर रहने दो, देर भी हो चुकी है, बरसात भी पड़ रही है। यह सुनकर पुजारी ने स्वामी जी को कहा अच्छा ठीक है सुबह सवेरे चले जाना। थोड़ी देर में बरसात भी जोर से बरसने लगी। पुजारी ने दरवाजे बंद कर दिए। फिर मंदिर के पुजारी एवं कर्मचारी मिलकर भोजन करने लगे स्वामी जी को भोजन के लिए नहीं बोला, **यद्यपि स्वामी जी दिन भर के भूखे थे फिर भी स्वामी जी जल पीकर वहाँ बरामदे में चादर बिछाकर थैले पर सिर रखकर सो गये।** इतना सब कुछ सहा है हमारे प्यारे सांई ने किसके लिए अपने लिए? बिल्कुल नहीं, वे चाहते तो एक ही जगह बैठकर भजन कर सकते थे पर संतों में एक सहज स्वभाव होता है– दूसरे जीवों का कल्याण करना, वे खुद वृक्ष बनकर सूर्य की प्रचण्ड किरणों को सहते हैं ताकि दूसरे जीवों को शीतलता मिले। **कहीं पर इतना सम्मान तो कहीं पर ऐसा तिरस्कार फिर भी उनके हृदय में सबके लिए समान भाव ही था।**

सुबह को स्वामी जी पुजारियों को बताकर रामबाग चले आये। राम बाग के कोठारी ने स्वामी जी को रहने के लिए कुटिया दी और आश्रम के नियम बताकर चला गया। स्वामी जी ने कुटिया में आसन लगाया, फिर नहा धोकर आश्रम के अन्य संतों से मिलकर शहर से भोजन खाकर आए। शाम को मंदिर में आए जो कि बहुत विशाल था, स्वामी जी ने पुजारी से पूछा कि यहाँ पर कोई सत्संग भी होता है क्या? इस पर पुजारी ने कहा कि जब कोई प्रसिद्ध महात्मा मण्डलेश्वर आते हैं तब व्यवस्था की जाती है सत्संग की, पर दो महीने हो गए ऐसे कोई महात्मा नहीं आये। यह सुनकर स्वामी जी ने कहा कि यदि आप लोगों की इच्छा हो तो कुछ दिन हम सत्संग करें। इस पर पुजारी ने कहा कि भाई गोपालदास यहाँ के प्रधान ट्रस्टी हैं वे कल शाम को आयेंगे, आप स्वयं उनसे इस विषय में कहना। दूसरे दिन शाम को जब स्वामी जी टहलकर मंदिर में पहुँचे तो भाई गोपालदास वहाँ पहले से ही मौजूद थे, पुजारी उनको सारी बात बता दी थी। **तो स्वामी जी से प कि आप कितने दिन सत्संग करेंगे? किस विषय बोलेंगे? सत्संग के कितने पैसे लेंगे? यह बात सुन स्वामी जी मुस्कराकर बोले, राजा शिखरध्वज एवं** चूड़ाला की कथा पर प्रवचन करेंगे और आठ दस कथा करेंगे, शेष सवाल रहा पैसों का तो हम लोग प्रव के लिए पैसा नहीं लेते। इस पर भाई गोपालदास ब यहाँ पर कई महात्मा आते हैं, कुछ लोग आपकी तरह कहते हैं पर बाद में लेनदेन पर बहुत खटपट करते इसीलिए हमें पहले इस बात का निर्णय हो जाए तो अ है। **यह बात सुनकर स्वामी जी ने विश्वास दिलाया हमारे पास ऐसी बात नहीं होती भोजन के लिए भी न स यदि यहाँ पर भोजन की व्यवस्था न होगी तो हम मधु कर लेंगे बाकी आप शहरवासियों को सूचना अवश्य दे** गोपालदास जी बहुत अच्छा कहकर चले गए।

दूसरे दिन शाम को सत्संग हुआ, सत समाप्त करने के पश्चात् स्वामी जी ने कहा कश्मीर में सुना था कि रावलपिंडी के लोगों में सत सुनने का बड़ा चाव है, परन्तु यहाँ तो ऐसी बात न नहीं आती। सत्संग आश्रम के संतों, सेवाधारियों अतिरिक्त शहर के कोई दस बीस लोग ही आए यह बात सुनकर भाई गोपालदास खड़े हो गये कहने लगे– भगवन्! सच पूछिये तो हमने शहर कोई सूचना ही नहीं दी है क्योंकि हमने आपस विचार किया कि स्वामी जी का सत्संग न कैसा हो पहले हम सुनें यदि पसंद आया तो शहर सूचना देंगे। हमसे बड़ी भूल हुई है, आपका सत सुनकर हम सब बड़े खुश हुए हैं। कल सारे नगर सूचना भेज देंगे।

भाई गोपालदास की सारी बात सुनकर स्व जी के मन में कोई विकार ही उत्पन्न न हुआ ब उन्होंने उनको धैर्य दिलाते हुए कहा कि आप सोच न करें आपने भूल नहीं की है आपने बुद्धि काम लिया है।

दूसरे दिन सत्संग में चार–पाँच सौ प्रेमी आये, तीसरे दिन बारह सौ इस तरह प्रतिदिन अधिक से अधिक प्रेमी सत्संग में आने लगे। सत्संग का प्रभाव बढ़ने लगा।

एक दिन सत्संग समाप्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि हम यहाँ से परसों प्रस्थान करेंगे। इस पर गोपालदास जी उठ खड़े हुए और कहने लगे– भगवन्! सत्संग ने तो अभी रंग पकड़ा है जहाँ दिन भर में इने गिने लोग आते थे वहाँ इतनी भीड़–भाड़, हम लोग आश्चर्य में पड़ गये हैं, सारा दिन मेला लगा हुआ है। प्रसाद के ढेर लगे रहते हैं, जितना लुटाते हैं उससे कहीं अधिक आ जाता है इसीलिए आप कुछ दिन और यहाँ ठहरने की कृपा करें। **इस रामबाग में कई संत महात्मा, चतुर्वेदी पण्डित, महामण्डलेश्वर कई बार आए हैं परन्तु हे भगवन् आप जैसे निर्मानी, निष्कामी, अभेदी, त्यागी, वैरागी आज तक नहीं आए। जिस समय आप सत्संग आरंभ करते हैं तो आपके भीतर न जाने कौन सा देवता आकर बैठता है जो हम सभी सत्संगियों को ऐसा तो अपनी तरफ खींचता है कि दिन–रात यही धुनि लगी रहती है कि कब शाम होगी, कब सत्संग में जायेंगे।** अतः हमारी और सारी संगत का नम्र निवेदन है कि आप कृपा कर कुछ और दिन रहें। भाई गोपालदास और सारी संगत की इच्छा देखकर सबका मान रखते हुए स्वामी जी ने वहाँ आठ दस दिन और रूकना स्वीकार किया और कहा कि जिस देवता के विषय में भाई गोपालदास ने संकेत किया उस देवता के दर्शन कल आपको सत्संग में करायेंगे।

दूसरे दिन सत्संग के पश्चात् स्वामी जी ने अपनी पुस्तक से सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज की सुन्दर मूर्ति निकालकर सारी संगत को दिखाई। **मूर्ति का दर्शन कर सारी संगत कहने लगी कि यह तेजस्वी मूर्ति किस देवता की है? ये महा योगेश्वर कहाँ विराजते हैं? यह सुनकर स्वामी जी कहने लगे कि यह दिव्य मूर्ति इस दास के सद्गुरू की है। कहाँ विराजते हैं? इस विषय में क्या कहें, सद्गुरू भगवान तो सर्वव्यापक हैं, ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ वे न हों, फिर भी सगुण साकार रूप में इस समय सिन्ध देश के टंडा आदम में "अमरापुर दरबार" में विराजते हैं। संसारी जीवों के लिए अवतार धारण कर आये हैं, जिन्होंने प्रेम प्रकाश पंथ की स्थापना की है एवं उनका मूल मंत्र "सत्नाम साक्षी" है।**

यह सुनकर सभी बड़े प्रसन्न हुए। भाई गोपालदास ने वो मूर्ति स्वामी जी की आज्ञा से मढ़वाकर मन्दिर में विराजमान की।

इस प्रकार स्वामी जी ने सद्गुरू महाराज की यशगाथा पूरे विश्व में फैलाई एवं अपने को सदा एक सेवक ही जताया। इतने कष्ट सहे पर मुख से उफ तक नहीं निकाला, हमेशा सबको आशीर्वाद ही बाँटते रहे। ऐसे संत हर किसी को नहीं मिलते, हमें मिले हैं तो हमें यह अवसर व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। अगर हम गुरू दरबार में आकर बिना कुछ पाए ही चले गए तो यह हमारा दुर्भाग्य होगा। स्वामी जी के पावन जन्मोत्सव पर अगर हम उनके अथाह गुणों रूपी सागर में से एक बूंद भी ग्रहण करने का संकल्प करें तो गुरू महाराज हमारा कल्याण अवश्यक करेंगे।

'बोलो गुरू भक्त सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज की जय।' –पूजा केवलरामानी लखनऊ

स्वामी सर्वानन्द समदर्शी आतम का पुजारी है।
आतम सब घट में इक देखत, ऐसी दृष्टिधारी है।
आतम की कर अमर आरती ज्योति ज्ञान की बारी है।
गुरुमुखदास श्री सत्गुरु की पूजा करता भारी है।

नारी धर्म

पूज्य सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज स्त्री शिक्षा के प्रति अनेक उपदेश देते थे। उनके जीवन चरित्र में इस स्त्री धर्म के बारे में बताया गया है। महाराज श्री के मुखार बिन्दु द्वारा उच्चारित 'स्त्री उपदेश' नाम कैसेट भी है जिसमें बड़ी सुन्दर शिक्षाएँ बताई गई हैं।

स्त्री जाति के लिए स्वतंत्र न होना ही सब प्रकार से मंगलदायक हैं। पूर्व में होने वाले ऋषि महात्माओं ने स्त्रियों के लिए पुरूषों के अधीन रहने की जो आज्ञा दी हैं, वह उनके लिए बहुत ही हितकर जान पड़ती हैं।ऋषिगण त्रिकालज्ञ और दूरदर्शी थे। उनका अनुभव बहुत सराहनीय था।

क्योंकि स्त्रियों में काम, क्रोध, दुःसाहस, हठ, बुद्धि की कमी, कपट, झूठ, कठोरता, द्रोह, ओछापन, चपलता, अशौच, दयाहीनता आदि विशेष अवगुण होने के कारण वे स्वतंत्रता के योग्य नहीं हैं।

अतएव उनके स्वतंत्र हो जाने से अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार आदि दोषों की वृद्धि होकर देश, जाति, समाज को बहुत ही हानि पहुँच सकती है। बालिका, युवती व वृद्धा स्त्री को भी (स्वतंत्रता से बाहर में नहीं फिरना चाहिए) और घरों में भी कोई कार्य स्वतंत्र होकर नहीं करना चाहिए। बाल्यावस्था में स्त्री पिता के वश में यौवनावस्था में पति के अधीन और पति के मर जाने पर पुत्रों के अधीन रहे किन्तु स्वतंत्र कभी न रहें।

यह बात प्रत्यक्ष भी देखने में आती हैं कि जो स्त्रियाँ स्वतंत्र होकर रहती हैं वे प्रायः नष्ट–भ्रष्ट हो जाती हैं। विद्या, बुद्धि और शिक्षा के अभाव के कारण भी स्त्री स्वतंत्रता के योग्य नहीं है।

साध्वी स्त्रियों को इस बात पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए कि घर में किसी प्रकार कलह, लड़ाई–झगड़ा न होने पावे क्योंकि कलह साक्षात् कलियुग की मूर्ति है जहाँ कलह होता है वहाँ क्रोध और क्लेश की वृद्धि होकर अनर्थ हो जाता है। कोई–कोई तो उत्तेजित होकर कुएँ में गिरकर, फाँसी लगाकर या जहर विष खाकर काल का ग्रास बन जाती है। काल, क्लेश, कल्पना, कलि इन सबकी उत्पत्ति कलह से होती है, इसलिए सुख चाहने वाली स्त्रियों को चाहिए कि इसको अपने घर में प्रवेश ही नहीं होने दें।

इसलिए इसका सूत्रपात होते ही प्रेम भरे विनय युक्त हितकारक सरल ठंडे वचनरूपी जल से सींचकर इस कलह–अग्नि को तुरंत बुझाने की चेष्टा करनी चाहिए। इस प्रकार का व्यवहार करने वाली स्त्री मनुष्यों के द्वा
ही नहीं, देवताओं के द्वारा भी पूजनीय बन जाती है। उ
मनुष्य न समझकर देवी समझना चाहिए।

विवाहिता स्त्री के लिए पतिव्रता धर्म के सामन कु
भी नहीं है, इसलिए मनसा, वाचा, कर्मणा पति के से
परायण होना चाहिए स्त्री के लिए पति परायणता ही मु
धर्म है इसके सिवा सब धर्म गौण हैं।

महर्षि मनु ने साफ लिखा है कि स्त्रियों को पति
आज्ञा बिना यज्ञ, व्रत, उपवास आदि कुछ भी नहीं क
चाहिए। स्त्री केवल पति की सेवा सुश्रूषा से उत्तम ग
पाती है। जो स्त्री पति की आज्ञा बिना व्रत उपवास आ
करती है, वह अपने पति की आयु हरती है और स्वयं न
में जाती है।

स्त्री के लिए पति ही तीर्थ है, पति ही व्रत है, प
ही देवता एवं परम पूजनीय गुरू भी पति ही है।

वही स्त्री पतिव्रता है जो अपने मन से पति का
चिन्तन करती है वाणी से सत्य, प्रिय और हित के व
बोलती है, शरीर से उसकी सेवा एवं आज्ञा पालन कर
है, जो पतिव्रता होती है वह अपने पति की इच्छा
विरूद्ध कुछ भी आचरण नहीं करती। वह स्त्री पति स
उत्तम गति को प्राप्त होती है और उसी को लोग सा
कहते हैं। स्त्रियों के लिए इस लोक और परलोक में प
ही नित्य सुख का देने वाला है इसलिए स्त्रियों
किञ्चिन्मात्र भी पति के प्रतिकूल आचरण नहीं क
करना चाहिए।

पत्नि को अपने पति का कभी अपमान नहीं क
चाहिए जो नारी अपने पति का अपमान करती है,
परलोक में जाकर महान् दुःखों को भोगती है।

पति का जो इष्ट है वही स्त्री का भी है, अतः प
के बताये हुए इष्टदेव परमात्मा के नाम का जप और
का ध्यान करना चाहिए। स्त्रियों के लिए पति ही गुरू
यदि पति को ईश्वर की भक्ति अच्छी नहीं लगती हो
पिता के घर से प्राप्त हुई शिक्षा के अनुसार ही ईश्वर
भक्ति, बाहरी भजन, सत्संग, कीर्तन आदि न करके
रूप से मन में ही करें। भक्ति का मन से ही विशेष स
होने के कारण यह जहाँ तक बन सके गुप्त रूप से
करनी चाहिए क्योंकि गुप्त रूप से की हुई भक्ति वि
महत्व की होती है। जो स्त्री इन सभी बातों का ध
रखकर कर्म करती है वह परम पद को प्राप्त होती है

सत्‌गुरु सर्वानंद चालीसा

पूरण पार ब्रह्म को बार बार है वन्द।
सर्वानंद बन सर्व को दीना सर्वानंद।।
आनंद अमृतलोक का आए बांटन काज।
अमर देश से सत्‌गुरू सर्वानंद महाराज।।
एक गुरू की ओट ली एक गुरू आधार।
एक भाव से भक्ति कर हो गए भव से पार।।
इष्ट राम के शंभु हैं शंकर के हैं राम।
सत्‌गुरू सर्वानंद के सत्‌गुरू टेऊंराम।।
वशिष्ट गुरू हैं राम के सांदिपनि गुरू श्याम।
सत्‌गुरू सर्वानंद के सत्‌गुरू टेऊंराम।।
सत्‌गुरू ब्रह्म स्वरूप है सतगुरू है महादेव।
विष्णु रूप गुरू जान के ताँकी कीनी सेव।।
इष्ट गुरू भगवान सब सत्‌गुरू टेऊँराम।
पूर्ण श्रद्धा भाव से बार बार प्रणाम।।
सिन्ध देश में सुन्दर ग्रामा, भिट्टशाह है तांका नामा।
तां में रहते सेवक रामा, तां घर आए गुरू सुखधामा।
ईश्वरी देवी मात प्यारी, भगवद् भक्ति करत न्यारी।
गोद पवीतर तांकी कीनी, मन की दुविधा सब हर लीनी।
देख देख के मोहक रूपा, हर्षी मात देख स्वरूपा।
सुन्दर भजन सुनावन लागी, लोरी दे दे गावन लागी।
चेलाराम नाना सुखदाई, नानी तांकी कृष्णा बाई।
दे आशीष दुलारन लागे, मीठे वचन उच्चारन लागे।
दिव्य तेज मुख ऊपर चमके, दामिनी नभ में जैसे दमके।
शान्त एकान्ती धीरजधारी, बालक सुख देता सुखकारी।
बचपन से मन विषयों मांही, एक निमष भी अटका नाहीं।
ज्यों–ज्यों आयू बढ़ने लागी, त्यों–त्यों उपशम वृत्ति जागी।
खान पान पहरन के मांहीं, रंच्चक वृत्ति लगती नाहीं।
बालक का यह देख स्वभावा, मातहृदय अति दुख को पावा।
ले बालक निज मैके आई, आकर बालक दशा बताई।
घर में भक्ति भाव था भारी, सत्संग की वर्षा सुखकारी।
सत्‌गुरू टेऊंराम का दर्शन, करके मन होया अति प्रसन्न।
बैठ चरण में शीश झुकाया, सत्‌गुरू शरन आपकी आया।
भव जल दुस्तर भगयन् भारी, अब तो लीनी ओट तुम्हारी।
कृपा कर निज दास बनाओ, नाम दान दे मोहि जगाओ।
जग के विषय भोग दुखदाई, तां में सूख न देखा राई।
सत्‌गुरू सिर पर हाथ घुमाया, नाम दान दे शिष्य बनाया।
नाम की मणि अमोलक पाई, वृत्ति सत्‌गुरू शब्द समाई।
तन से सेवा मन से सुमिरन, इस विधि बीतन लागा जीवन।
गुरूकृपा से भया प्रकाशा, अविद्या तम का भया विनाशा।
वाणी भी अब बरसन लागी, नाम जपाया हरि अनुरागी।
गांव गांव में हरि गुन गाया, प्रेम प्रकाशी ध्वज झुलाया।
गुरू आज्ञा ले तप के कारन, ऋषिकेश में कीना आसन।
झाड़ी सुन्दर एक बनाके, तां में बैठे ध्यान लगाके,
अल्पाहारी निंद्रा जीती, पूरण लाई गुरू से प्रीती।
सुन्न मण्डल में लाय समाधी, पाया आतम सूख अनादी।
गुरूमंत्र से मन को जीता, हर्ष शोक से भया अतीता।
गुरू महिमा निशिवासर गाए। विद्या नींद से सबहीं जगाए।
महा प्रयाण सत्‌गुरू जब कीन्हा, पंच भूत तन को तज दीन्हा।
आसन सब मिल इन्हहिं बिठाए, यश कीर्ति सत्‌गुरू प्रगटाए।
भया विभाजन भारत का जब, जयपुर आ स्थान किया तब।
तीन लोक प्रसिद्ध महाना, यहां बना सुन्दर अस्थाना।
अमरापुर स्थान नाम है, अमृतमय सो अमर धाम है।
प्रतिमा गुरू की और समाधी, दर्शन से ही कटे व्याधी
उन्नत ध्वजा प्रेम प्रकाशी, परिक्रमा से कटे चौरासी।
ग्रंथ प्रेम प्रकाश छपाया, गुरूवाणी को अमर बनाया।
धन्य–धन्य गुरू सर्वानंदा, दर्शन से पाइए आनंदा।
सर्वानंद नाम जो गावे, भवसिन्धु से शीघ्र तर जावे।
एकदेशी नहीं एकानंदा, सर्वानंद सर्व आनंदा।
अल्पकालिक नहीं अल्पानंदा, सर्वानंद सर्व आनंदा।
स जानो सच्चिदानंद रूपा, रमता राम **र** सर्व अनूपा।
वा वायु के बीच समाया। **न** नारायण बन जग जाया।
दीन दयाल **द** दे आनंदा, जय जय जय गुरू सर्वानंदा।
धनहर गुरू जग बहुत हैं मनहर जग में चंद।
मनहर मन मोहन मिला सत्‌गुरू सर्वानंद।।
आत्मानंद अखण्ड सो स्वयं सचिदानंद।
परमानंद मय आप सो सतगुरू सर्वानंद।।
सर्व शिरोमणी संत हैं सदा देत आनंद।
किन्तु हमारे मन बसे सत्‌गुरू सर्वानंद।।
गुरू चालीसा गाय जो नित निष्ठा के साथ।
सत्‌गुरू के तिस दास यम न लगावे हाथ।।

पूजन वि

4 नवम्बर दीपोत्सव पर विशेष

महालक्ष्मी पूजन

पूजन महूरत

सर्वश्रेष्ठ महूरत :- सायंकाल ६:०० बजे प्रदोष
श्रेष्ठ महूरत :- वृषभ लग्न ६:३३ बजे से ८:२८ बजे तक
अर्धरात्रि-सिंह लग्न १:०० बजे से ३:१७ बजे तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या को दीपावली होती हैं। दीपावली के दिन सायंकाल के समय भगवती लक्ष्मी एवं भगवान गणेश की नवीन प्रतिमाओं का पूजन करना चाहिए।

यूं तो पूजा का विधान अत्यधिक विस्तृत है किन्तु हम उसका संक्षेप में वर्णन करेंगे।

चौकी पर नया स्वच्छ कपड़ा बिछाकर चौकी पर गणेश, गौरी, नवग्रह, कलश, षोडश मातृका को स्थापित करें। पूजा का सामान थाली में सजाकर रखें।

सर्वप्रथम बायें हाथ पर जल लेकर दायें हाथ से अपने को छींटे लगायें।

मंत्र- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इसके बाद दायें हाथ पर तीन बार जल लेकर निम्न मंत्रों द्वारा पीवें-

(1) ॐ केशवाय नमः, (2) ॐ माधवाय नमः, (3) ॐ गोविन्दाय नमः। फिर एक बार जल लेकर हाथ धो लें। ॐ हृषीकेशाय नमः।।

फिर दायें हाथ में जल पुष्प और दक्षिणा लेकर संकल्प करें।

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरूषस्य विष्णो राज्ञाया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽहि द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत वारातंकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशाति तमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारत वर्षे आर्यावर्तैक देशे (अमुक) नगरं का नाम..... नगरे (गोत्र का नाम) अमुक गोत्रोत्पन्नः (नाम अपना) ..... अहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फला वायित कामनया ज्ञाता ज्ञात कापिक वाचिक मानसिक सकल पाप निवृत्ति पूर्वकं स्थिर लक्ष्मी प्राप्तये श्री महालक्ष्मी प्रत्यिर्थ महालक्ष्मी पूजनं महं करिष्ये तदङ्ऽवेन गणेश, षोडश मातर, नव कलश पूजनं महं करिष्ये।

इसके पश्चात् गणेश का पूजन करें।

हाथ में चावल एवं पुष्प लेकर गणेश का ध्यान आव्हान करें।

ॐ विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेव नमस्कृतं
सर्व विघ्न हरं गौरी पुत्र भावाह्याम्हम्।।
ॐ गजाननं भूत गणाधि सेवितं – कपिथ जम्बू
चारू भक्षणम्। उमा सुतं शोक विनाशकारकम् नम
विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।

श्लोक कहकर गणेश जी पर पुष्प एवं अक्षत छोड़ दे

पूजन विधि–1

1. पाद्योपाद्यं समर्पयामि – **गणेश जी पर जल चढ़**
2. हस्तयो अर्धं समर्पयामि– **गणेश जी पर जल चढ़**
3. मुखे आचमनीयं समर्पयामि–**गणेश जी पर जल चढ़**
4. स्वाङ्गें स्नानं, समर्पयामि – **गणेश जी पर जल चढ़**
5. गन्धानुलेपनं समर्पयामि– **गणेश जी पर रोली चढ़**
6. अक्षतान समर्पयामि – **अक्षत चढ़ावें**
7. पुष्पाणि समर्पयामि – **पुष्प चढ़ावें**
8. नैवेद्य निवेदयामि – **मिठाई चढ़ावें (प्रसाद)**

फिर तीन बार जल चढ़ा दें।

9. धूपं माघ्रापयामि – **धूप से इशारा करें**
10. दीपं दर्शयामि – **दीप का इशारा करें**
11. नमस्कारं कुर्यात – **नमस्कार करें।**

पुनः चावल पुष्प हाथ में लेकर षोडश मातृका पूजन क

गौरी पद्माशची मेघा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता।

भगवतीभ्यः षोडश मातरे भ्यो नमः।।

पूजन :

1. पाद्यो पाद्यं समर्पयामि–**जल चढ़ावें**
2. हस्तयो अर्धं समर्पयामि–**जल चढ़ावें**
3. मुखे आचमनीयं समर्पयामि–**जल चढ़ावें**
4. स्वांगे स्नानं समर्पयामि–**जल चढ़ावें**

रोली चावल इत्यादि पुनः करें। (1 के अनुसार)

चावल पुष्पं लेकर नवग्रह पूजन

ॐ ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्त कारी
भानु शीश भूमि सुतो बुधश्च
गुरूश्च शुक्र शनि राहु केतवः।
सर्वे ग्रहा शान्ति करा भवन्तु।।

नवग्रह का जल अक्षत नैवेद्य आदि पूजन करें। (1) के अनुसार

कलश पूजन – कलश पर नारियल रखें मौली बांध पांच पान के पत्ते रखें। चावल पुष्प हाथ में लेकर पूजन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रूद्रः समाश्रितः।
मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋगवेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगेश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शांतिः पुंष्टिकरी तथा।।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरू।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।।

पुनः 1 के क्रमानुसार पूजन करें।

लक्ष्मी पूजन

कटोरी में पान के पत्ते पर द्रव्य (सिक्के) महालक्ष्मी रख कर पूजन करें।

क्षीर सागर संभूतां शरीरे विष्णु माश्रितां।
यजमान हितार्थाय लक्ष्मी मावाह्याम्यम्
नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते।।
महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिया नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी
मन्त्र पूते सदा देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तुते

चावल पुष्प लक्ष्मी पर चढ़ा दें। फिर द्रव्य पर दूध चढ़ावें

मंत्रः– कामधेनु समुत्पन्नं, सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

सिन्दूर चढ़ावें–गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो प ह्वये श्रियम्।

पुनः क्रम 1 के अनुसार पूजन करें।

आरती करें

ॐ जय लक्ष्मी माता–मैया जय लक्ष्मी माता
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता

1. उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जगमाता
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता
2. दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता
जो कोई तुमको ध्यावत् रिद्धि सिद्धि धन पाता
3. तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता
कर्मप्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता
4. जिस घर में तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता,
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता
5. तुम बिन यज्ञ न होते वस्त्र न हो पाता,
खान पान का वैभव सब तुमसे आता
6. शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरों दधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता
7. महालक्ष्मी की आरती, जो कोई नर गाता,
उर आनंद समाता पाप उतर जाता

आरती के पश्चात् – पुष्पांजलि सभी हाथ में पुष्प लेकर

ॐ महालक्ष्मै च विद्महे, विष्णु पत्न्यै च धीमहि
तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् – कहकर **पुष्प लक्ष्मी पर चढ़ावें**

परिक्रमा करें – साष्टांग प्रणाम करें।

क्षमा प्रार्थना हाथ जोड़कर–

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरिं
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्ण तदस्तु मे
आहवानं न जानानि न जानामि विसर्जम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परेश्वरि।

गोपाष्टमी–महोत्सव ऐसे मनायें

गौका माहात्म्य एवं महत्त्व बताने की आवश्यकता नहीं है, तथा यह भी बताने की आवश्यकता नहीं कि भगवान् श्री कृष्ण का अतिप्रिय 'गोविन्द' नाम गायों की रक्षा करने के कारण ही पड़ा। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से लेकर सप्तमी तक गो–गोप–गोपियों की रक्षा के लिये श्रीकृष्ण गोवर्धन पर्वत को धारण किये रहे। आठवें दिन इन्द्र की आँख खुली और वे अहंकार–रहित होकर भगवान् श्रीकृष्ण की शरण में आये, कामधेनु ने भगवान् का अभिषेक किया और उसी दिन भगवान् का 'गोविन्द' नाम पड़ा।

उसी समय से कार्तिक शुक्ल अष्टमी को गोपाष्टमी का उत्सव मनाया जाने लगा, जो अब तक चला आ रहा है। कार्तिक शुक्ल अष्टमी को प्रातःकाल के समय गौओं को स्नान करायें। गन्धा–पुष्पादि से उनका पूजन करें और अनेक प्रकार के वस्त्रालंकार से अलंकृत करके उनके गोपालों (ग्वालों) का पूजन करें, गायों को गोग्रास देकर उनकी परिक्रमा करें और थोड़ी दूर तक उनके साथ जायें तो सब प्रकार की अभीष्ट–सिद्धि होती हैं। इसी गोपाष्टमी को सायंकाल के समय गौऐं चंरकर जब वापस आयें, उस समय भी उनका आतिथ्य, अभिवादन और मन्त्रोच्चार–पूजन करके कुछ भोजन कराये और उनकी चरण रज को मस्तक पर धारण करके ललाट पर लगायें तो उससे सौभाग्य की वृद्धि होती है।

गोपाष्टमी के दिन क्या–क्या करें?

गोपाष्टमी के मनाने का सुंदर ढंग और उस दिन किये जाने वाले कार्य नीचे लिखे अनुसार हों तो उत्तम है–

1 गायों को नहा–धुलाकर स्वच्छ करना और उन्हें भाँति–भाँति से सजाना, 2. गायों के रहने के स्थान की भली भाँति सफाई करना, 3. गाय और ग्वालों की विधिवत् पूजा करना और स्वादिष्ठ से उन्हें संतुष्ट करना, 4. उस दिन गौशाल पिंजरापोलों में जाकर वहाँ के उत्सवों और क में भाग लेते हुए गोपालन के संबंध में विचार- करना, 5. गोशाला और पिंजरापोलों में यः दान देना, 6. गाँव–गाँव और नगर–नगर मे हों, जिनमें गो–संबंधी इस बातों पर विचार

(अ) देश में सर्वत्र गो–हत्या का निवारण सकता है?

(आ) गायों की वर्तमान स्थिति में, उनकी और दुग्धोत्पादन में किन साधनों से सु सकता है?

(इ) गोबर और गोमूत्र का अधिक–से–अधि के रूप में उपयोग कैसे किया जा सक

(ई) गोपालकों को आवश्यक सुविधाएँ कै सकती हैं?

7. उस दिन लोगों को ठीक–ठीक स और उनके भावों को जाग्रत कर यह करनी–करानी चाहिए–

(क) हम उस आदमी के हाथ गौ कभी नहि जिस पर संदेह हो कि वह घर में पालन न कर सीधे कसाई को या क हाथ में दे देने वाले किसी को बेच दे

(ख) हम उन चमड़े, चर्बी तथा हड्डी आदि व लिये व्यवहार और व्यापार कदापि नहि जिनके कारण गायों की हत्या होती

(ग) वनस्पति–तैल (नकली घी) का व्यवह करेंगे।

इस प्रकार उस दिन का सारा समय में ही लगाना चाहिये। ऐसा करने से गो सच्ची उन्नति हो सकेगी, जिस पर हमारी सोलहों आने निर्भर है।

गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डली का स्पेन व दुबई में भव्य अभिनंदन

आज का युग में विभिन्न प्रकार की आधुनिक सुख सम्पदा औद्योगिक विकास में मानव का जीवन संसार के वैभव ऐश आराम विलासता की ओर बढ़ता जा रहा है। वह मानव का जीवन उनकी ओर आकर्षित होकर उस परम पिता परमात्मा की ओर से पीछे होता जा रहा है, जो कुछ भी इन्सान करता है वह स्वयं का स्वयं करने वाला ही मानता है परन्तु संत महापुरूष मानव जीवन व सुंदरता वैभव धन पदार्थ को उस परमात्मा की देन व पूर्व कर्म अनुसार प्राप्ति व पुरूषार्थ का फल बताते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने अपनी अमृतवाणी गीता के अंदर कर्म प्रधानता व ज्ञान की श्रेष्ठता, श्रेष्ठ गुणों को धारण करना मानव का कर्तव्य बतलाया है। ऐसी अमृतवाणी व आचार्य सत्गुरू टेऊँराम जी महाराज की सुन्दर श्रेष्ठ जीवन कल्याण की शिक्षाएँ उपदेश व वेदोक्त वचन का प्रचार प्रसार व परमात्मा के नाम स्वरूप लीलाओं व धाम तक पहुँचने का साधन जो कि "मानव जीवन" है की सार्थकता का सारांश सुनाने समझाने व अनुभव कराने के लिए समय–समय पर संत महापुरूष अवतार लेकर संसार के जीवों को सत्मार्ग पर लगाने हेतु आते हैं। जैसा कि परम श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय वन्दनीय सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज गुरू भक्त योगीराज सत्गुरू सर्वानंद जी महाराज, प्रेम भक्ति स्वरूप सत्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज व मर्यादास्वरूप सत्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज आये व उन्हीं के पद प्रदर्शक सुन्दर शिक्षा व अनुभवों का सार बतलाने हमारे गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज आज देश विदेश भ्रमण करते हुए प्रेमप्रकाशी पंथ का नाम ऊँचा कर रहे हैं। ऐसे महापुरूषों का जीवन धन्य है। उनकी वाणी मानव के कल्याण की पथ प्रदर्शक है आईये पूज्य महाराज श्री के साथ हम सब भी इस विवरण के साथ मानसिक रूप से विदेश यात्रा करें।

अमेरिका यात्रा उपरान्त सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के साथ सन्त श्री जयदेव ज़ी महाराज, सन्त श्री नामदेव जी, सन्त हरीओम प्रकाश व जयपुर से अमरापुर दरबार के विद्यार्थी सन्तों में सन्त नरेशलाल जी, सन्त परसराम, सन्त लक्ष्मण, सन्त नन्दलाल जी भी फ्रेंकफर्ट (जर्मनी) आकर मिले जहां से स्पेन के मलाग़ा नगर पहुंचे जहां पर सत्गुरु महाराज के प्रेमी श्री देवराज हेमां जी के निवास पर प्रवास हुआ। तदुपरान्त दूसरे दिवस पर स्पेन के साउथा नगर में पधारे जहां पर माता पदमादेवी सुन्दरदास (पूना निवासी) के यहां पर निवास किया यहां कंई प्रेमियों द्वारा सत्गुरु महाराज व सन्त मण्डली का हृदय से स्वागत किया गया। सांयकाल सत्संग बैंक के नीचे बने हाल में किया गया व प्रातः सत्संग सत्नाम साक्षी मंदिर पर किया गया व कई प्रेमियों के घरों में भोजन भजन के लिये चरण पखारे। सत्गुरु महाराज के दर्शन सत्संग हेतु साऊथा के प्रेसीडेन्ट व गणमान्य लोग भी पधारे जिन्होंने प्रस्ताव रखा कि यदि आप मन्दिर बनाना चाहें तो हम आपको भूमि प्रदान कर सकते हैं तीन दिन यात्रा उपरान्त श्री गुरु महाराज जी व सन्त मण्डली सहित (जुबरालटर) इंग्लेण्ड की भूमि पर पधारे। जहां नवनिर्मित हिन्दू मंदिर पर सांयकाल 6 से 9 तक सत्संग, भजन व भण्डारे का कार्यक्रम हुआ। यहां पर श्री गुरु महाराज के सिन्ध के पुराने प्रेमियों ने भी गुरु महाराज का दर्शन कर पुरानी स्मृतियों को सन्त मण्डली के साथ ताजा किया। इस शहर में मंदिर पहाड़ के ऊंचे शिखर पर बना था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो अमरापुर स्थान टंडा आदम आश्रम पर सत्संग हो रहा है। जमीन से लगभग 50 सीढ़ियां ऊपर आश्रम बड़ा दर्शनीय सुन्दर स्थान बना हुआ था।

तदुपरान्त रात्रि सड़क मार्ग द्वारा चलकर फिर मलागा (स्पेन) नगर में पहुंचे सांयकाल सत्संग हिन्दू मंदिर में किया गया व दूसरे दिन प्रातःकाल श्री देवराज हेमा के यहां पर हवन व सत्संग आयोजित था। जब सभी सन्त बैठकर हवन कर रहे थे व ब्राह्मण देव जी तब ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों पुरातनकाल में जैसे ऋषियों द्वारा यज्ञ किया जा रहा हो।

मलागा शहर मध्य में भी कई पुराने प्रेमी पूर्वज श्री गुरु महाराज जी के मिले जहां सत्संग व दर्शन का आनंद हुआ।

मलागा यात्रा पूर्ण कर सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज स्पेन के लासपालमास नगर में वायुमार्ग द्वारा पहुंचे जहां पर अपार जन समूह सत्गुरु महाराज व सन्तों के स्वागत हेतु उपस्थित था। स्पेन के अन्य नगरों से यहां पर अधिक प्रेमी रहते है। भक्त खुशीराम मानों सुधामा व बिन्दु सुशीला जी के घर पर निवास किया यहाँ के प्रेम स्नेह की क्या गाथा लिखी जाय। जैसा आनन्द गोपियों ने कृष्ण जी को पाने में प्राप्त किया था ठीक वैसा ही प्रेम यहां के प्रेमियों में देखा गया। जहां पर कई माताऐं बहिने प्रेमी गुरु महाराज जी के दर्शन सत्संग का आनंद पाकर तनमन से फूले न समा रहे थे। यहां पर सत्नाम साक्षी मंदिर भी जैसा कि श्री वृन्दावन में बांके बिहारी जी का मंदिर है चकाचक प्रेमियों से भरा बैठने व खड़े होने की भी जगह नहीं, इतना प्रेम इतना सुन्दर स्थान हमने सूर में भी देखा। सूर के नगर स्थान पर भी सत्नाम साक्षी मंदिर है जहां पर प्रेमी भक्त कमल व पुष्पा जी सेवा सत्संग कर सत्गुरु महाराज जी का यश गान किया करते है। जितने दिन पूज्य स्वामी जी इस शहर में रहे, प्रेमी प्रेम के कारण घर दुकान को छोड़कर सेवा सत्संग से जुड़े रहे यहां पर भी श्री गुरु महाराज के पुराने प्रेमी मिले जिनकी अपार श्रद्धा श्री गुरु महाराज जी के लिये है। इस लासपालमास नगर में श्री योगीराज गुरु भक्त सत्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज जी का पुण्य तिथि महोत्सव आनन्द प्रेम व अपार श्रद्धा भक्ती के साथ मनाया गया।

इसके उपरांत श्री गुरु महाराज सन्त मण्डली के साथ वायुयान द्वारा फोर्त विन्तूरा नगर में भक्त श्यामलाल जानकी जी के नवीनतम घर पर पधारे जहां पर उनके परिवारजनों व अन्य प्रेमियों ने श्री गुरु महाराज का स्वागत किया। दूसरे दिन यहाँ पर हवन सत्संग भजन भण्डारे का आयोजन रखा गया। इसी दिन हवन कर लेने के समय देवताओं द्वारा पुण्य वर्षा बरसात बरसते देखी गयी। यहां पर श्री गुरु महाराज व सन्तों की परीक्षा लेने हेतु मानों स्वयं लक्ष्मी जी आयी थीं। इतने प्रश्न सवालों की पंक्ति बांधी कि क्या कहें जवाब सुनकर परम शान्ति पायी व ऐसा उन्होंने अनुभव किया कि इस समय में ऐसे सन्तों को न मैंने देखा न पाया है। सादगी सरलता वैराग्य वृती व मधुर संभाषण सुनकर सभी लोग मंत्रमुग्ध से हो गये, तीन दिवस सत्संग दर्शन का आनन्द देने के उपरान्त श्री गुरु महाराज सन्त मण्डली सहित लानसरोते नगर पहुंचे जहां पर भक्त रामन् व मन्जू के यहां पर निवास किया जिनके यहां पर श्री गुरु महाराज व सन्तों समेत हवन यज्ञ व सत्संग किया गया। यहां पर 26 अगस्त को पहुंचे इस दिन गुरुदेव श्री स्वामी हरिदासराम जी महाराज अपनी पंचभौतिक काया त्याग कर अमरापुर धाम पधारे थे। मानों यही दिवस उनकी स्मृति ले आया इस दिवस पर श्री गुरु महाराज स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा गरीबों व बेसहारा लोगों को अन्न दान दिया गया व उनको अश्रुपूर्ण भाव से श्रद्धांजलि दी। इसी स्थान पर पहुंचकर वह घर व उसमें उस स्थान का दर्शन करने गये जहां श्री सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जी का प्रवास के दौरान ही शरीर शांत हुआ था। बराबर सभी दिवस उनकी याद में बिताकर तीन दिवस सत्संग दर्शन का लाभ एवं सिन्धी प्रेमी द्वारा व्यक्तिगत बनाये गये मंदिर में बड़े

संख्या में प्रेमियों ने प्राप्त किया। इसी यात्रा मध्य में श्री गुरु महाराज जी के साथ श्री स्वामी जयदेव जी संत नामदेव जी सन्त हरीओमलाल जी व सन्त नरेश सन्त परसराम सन्त नन्दलाल सन्त लक्ष्मण जी भी थे साथ में अन्य भक्त प्रेमी बहिने भी थीं। एक छोटे जहाज में, 19 लोग जो कि एक बस के समान था यात्रा करने तनरीफ में भक्त ईश्वरलाल व प्रेमादेवी भक्त भागचंद लवीना व अन्य प्रेमियों के पास निवास किया व सत्संग का आयोजन बड़े विशाल क्लब में किया गया। जहां पर ऐसा सुन्दर तो स्टेज बनाया गया था जैसा कि सिन्ध में आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी का टंडा आदम का दृश्य था। जहां सन्तों व भक्तो ने फोटो निकालकर मानों पुरानी याद को नया कर दिया। तनरीफ में कई प्रेमियों के घरों में सत्संग व चरण पखार कर, मन व तन को आनन्द प्रदान किया, इस क्षेत्र में भी भक्त प्रेमियों का अपार समूह था दूर–दूर के प्रेमी भक्त लोग श्रद्धा व हृदय उमंग से सत्संग दर्शनार्थ आते थे। तनरीफ से सड़क मार्ग द्वारा प्लाइ नगर अमेरिका में बहिन दया जहां कि सत्संग होता है। गुरु महाराज जी व सन्तों का भजन सत्संग भोजन हुआ जहां पर भी कई प्रेमियों ने आनन्द प्राप्त किया, बहिन दया ने श्री गुरु महाराज सन्तों की सेवा में अपना पूर्ण योगदान दिया।

इसके उपरान्त श्री गुरु महाराज व सन्त मण्डली के साथ लासपालमास हवाई जहाज द्वारा पहुंचे जहां कई प्रेमी दर्शनार्थ आए। प्रेमियों के हृदय में प्रेम की लहर उमड़ आयी व गुरुदेव सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पवित्र याद में बड़ा भंडारा हुआ।

यहां का प्रवास थोड़े दिवस होने के कारण कई अन्य नगरों से दर्शनार्थ बसों द्वारा प्रेमीगण सत्संग का दर्शन आनंद लेने आते थे। तीन दिन का प्रवास होने के उपरान्त श्री गुरु महाराज स्पेन के मेड्रिड शहर में हवाई जहाज द्वारा पहुंचे जो कि स्पेन की राजधानी है पहुंचने पर श्री गुरु महाराज व सन्तों का फूलमालाओं व जयघोष की मधुर ध्वनी में स्वागत किया गया। प्रेमी प्रकाश के निवास पर प्रवास हुआ जहां कि गुरु महाराज का छोटा दरबार है, जहां प्रेमी लोग सत्संग करते हैं। प्रेमी प्रकाश व अन्य प्रेमियो द्वारा पूज्य स्वामी जी व सन्तों का सत्संग गीता मंदिर में रखा गया। वर्षो बाद श्री गुरु महाराज व सन्तों का सत्संग सुनकर प्रेमी बड़े आनन्दित हुए, तीन दिन प्रवास उपरान्त एक दिन के लिये रेल द्वारा वार्सीलोना नगर में पधारे जो कि एक बड़ा शहर है पूरा दिवस वहां पर रहकर प्रेमियों को भगवत् नाम का रसास्वादन कराकर वापस मेड्रिड पहुंचे, जहां प्रेमियों ने पुनः आगमन हेतु विनीत प्रार्थना की। इस प्रकार इस स्पेन यात्रा के दौरान प्रेमियों को ईश्वरीय मार्ग का पथ बतलाते हुए नाम का उपदेश देते हुए हजारों प्रेमियों के जीवन की दिशा को परिवर्तित किया। जहां वायुयान जलयान व थलयान एवं पैदल चलकर भी प्रेमियों को प्रसन्नता देते हुए तारीख 11 सितम्बर रात्रि 12:35 पर दिल्ली के हवाई अड्डे पर अमेरिका, स्पेन यात्रा पूर्ण कर पहुंचे जहां पर अमरापुर से बस द्वारा कई प्रेमी दर्शनार्थ पधारे दिल्ली रायपुर, जयपुर, ग्वालियर, नेहरू नगर व कई शहरों से स्वागत दर्शनार्थ हेतु पधारे। रात्रि 2:30 बजे श्री गुरु महाराज व सन्त मण्डल अमरापुर स्थान जयपुर के लिये रवाना हुये। आज प्रेमियों के अन्दर इतना दर्शन भाव उमड़ उठा मानों महीनें नहीं परन्तु श्री गुरु महाराज वर्षो भर यात्रा पर गये हुए थे। जैसे चन्द्रमा के साथ तारे चमक कर आकाश में दिखते हैं ऐसे पूरा दरबार में प्रसन्नता आनन्द की लहर छा उठी।

भजन

स्पेन यात्रा में वहां के प्रेमी भक्त माता शीला व प्रेमियों द्वारा गाये गये भजन

करे दर्शन सत्गुरु जो मुहिंजा सभ दुख दूर थिया
सालनि खां सवाल कयनि से सभु मंजूर थिया
1. जीअं हाणे निभाई थव तीअं तोर निभाईन्दा
जदहि भीड़ पवे बाबा पहिंजा हथ देई बचाईदां

तुहिंजे चरन घुमाइण सां भंडार भरपूर थिया।

2. हर चीज मिले हरदम पर सत्संग भागनि सां
तकदीर खुले जहिंजी तहिंजो संगु थिए संतनि सां
तुहिंजी शेंवा करे शेवक अजु सभु मशहूर थिया

3. तव्हांजो दरू न छदियां दाता शल रहिजी अचे तव्हां सां
तव्हां सभ कुछ मूंखे दिनो अहिसान मञां तव्हांजा
सारी संगति खे तुहिंजां दर्शन अजु जाहिर जहूर थिया

भजन

चरननि तां गुरु चरननि तां वार वञां। बलिहार वञां
दया करे गुरु कृपा करे अङण मुंहिंजे आया पेर भरे

1. मोह ममत जी बाहि बरे तनु मनु हिरदो मुंहिंजो सरे
दुख में भरिजी दञांहू करे दर्शन बिन हीअ दिल ना ठरे
सूरत तां गुर मूरत तां

2. राग द्वेष खे दूर करे मन जा संसा चूर करे
विषयुनि खां मनु थिए तो परे ग्यान जी अंदर जोति बरे
वाणीअ तां गुरवाणीअ तां वार वारं बलिहार वञा

दुबई यात्रा विवरण

दिनांक 15 सितम्बर जयपुर से विमान से रवाना होकर सत्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डल रात्रि 12 बजे दुबई हवाई अड्डे पर पहुंचे। जहां पर कई प्रेमियों द्वारा पूज्य स्वामी जी व संत मण्डली का हार्दिक स्वागत किया गया। विमान तल से कारों द्वारा श्री नारायण दास हासवानी के यहाँ पहुंचे, यहीं पर संत मण्डली के प्रवास की व्यवस्था की गयी थी। पूज्य सत्गुरू महाराज जी की इस यात्रा में जयपुर से कई प्रेमी भी दुबई यात्रा हेतु पधारे जिसमें श्री मोहनदास, दादा होतचंद, दादा गोपालदास व पूज्य महाराज जी की माताश्री कौशल्यादेवी व पिताश्री श्री टीकमदास जी के साथ अन्य प्रेमीगण भी थे।

यहाँ दुबई में श्री गुरु महाराज के पुराने प्रेमी रहते हैं। ठीक दो वर्ष बाद सत्गुरु महाराज व सन्त मण्डल का दर्शन पाकर बड़े आनंदित हुए, कई प्रेमियों के घर दुकानों में चरन पखारकर सत्संग भजन अमृत का पान कराया। सिन्ध कम्युनिटी हाल में प्रतिदिन सत्संग रात्रि 9 से 10:30 तक कि गया। जहाँ दुबई व आसपास क्षेत्र से कई कारों द्वारा पहुंच कर सत्संग का आनंद लिया व थे मानों इसी तरह का आनन्द छा गया हो ज पृथ्वी पर स्वर्ग की छटा छाई हो, सभी प्रेमी सत महाराज जी व सन्तों के भजन सत्संग का अ पाकर न जाने कहाँ कहाँ से आ जाते थे इ धनाड्य नगर में श्री गुरु महाराज जी का सत्संग दर्शन कार्यक्रम आश्रम पर भी रखा ग गुरु दरबार का दर्शन पाकर बड़ा आनन्द अ जहां पर आचार्य श्री सत्गुरु सर्वानंद जी महा सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के स्व के साथ सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महा का छोटा स्वरूप विराजमान था। वीना एवं बक्षानी, राम तोलानी, कैलाशचन्द्र होतचंद मनव जेठानंद, भेरूमल, घनश्याम जी पागारानी, मुरल जी, पुरुषोत्तम जी, बोधराम टीकमदास, शंकरल विजयकुमार बक्षानी ऐसे सौभाग्यशाली प्रेमी जहाँ पर पूज्य गुरु महाराज जी व सन्त मण्डल सत्संग भजन का आनन्द प्रेमियों ने प्राप्त कि इसके अतिरिक्त प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 9:15 तक श्री नारायणदास हासवानी के निवास पर (प्र स्थल) सत्संग की ज्ञान गंगा में प्रेमियों ने डु लगायी।

दुबई यात्रा में पूज्य महाराज श्री के साथ नामदेव जी सन्त हरीओम प्रकाश जी सन्त शम्भू सन्त श्यामलाल, सन्त परसराम, सन्त हरीश कुम भक्त मूलचंद जी सम्मिलित थे।

भारत–पाक के तनाव के कारण भारत अ असमर्थ पाकिस्तान के प्रेमी दुबई में पूज्य मह श्री के दर्शनार्थ पहुंचे। कन्धकोट (सिन्ध) से कमलकुमार, भीमनदास, नानकराम, गोपीचंद, पूरन ओमप्रकाश, जयरामदास (कश्मोर सिन्ध से) द कुमार, सुनील कुमार जी पूज्य स्वामी ज सन्तमण्डल का दर्शन–सत्संग पाकर कृतार्थ ह

ज्ञान सत्संग चर्चा

पूज्य सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के जन्मोत्सव पर लासपालमास (स्पेन) में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का सत्संग

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में इस वर्ष गुरुपर्वों की मौज विदेश में रह रहे प्रेमियों ने लूटी। इसी कड़ी में लासपालमास (स्पेन) के सत्नाम साक्षी मंदिर में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के तृतीय पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित श्री कृष्णस्वरूप सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का पावन प्राकटोत्सव भरपूर उल्लास के साथ पूरे स्पेन से आये प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली के सानिध्य में मनाया। इस अवसर पर आयोजित विशेष सत्संग सभाओं में पूज्य गुरुवर व सन्तों के श्रीमुख से निःसृत ज्ञान गंगा में आईये हम भी विचरण करें।

सन्त नन्दलाल–मूखें जोगी पवनि, यदि जिनि नाम
या जो दानु दिनो से सांगी शाल मिलनि
सन्त परसराम–हलु तूं प्यारे सत्गुरु द्वारे मन में श्रद्धा धारे
श्रद्धालुनि जा सत्गुरु सांई सभई कारज संवारे।

भजनानन्द के बाद सन्त हरिओम प्रकाश जी ने भी सत्गुरुमहाराज का रचित भजन गाकर उनके जीवन के बारे में प्रेमियों को बताते हुए कहा।

शान्तीअ जो दे सत्गुरु दानु शान्तीअ जो मां सुवाली आहियां।

प्रेम प्रभुअ जो दिल में आयो
होश अकुल जहि शान विञायो
रोअन्दे रात विहाणी

परमात्मा को मन की भावना से प्राप्त किया जा सकता है मन संसार के अनंत–अनंत विषयों में फंसा हुआ है जैसे–धन, परिवार, मकान इत्यादि अनेक रसों में डूबा हुआ है और ऊपर से चंचल भी है पर संत महापुरुष हमें जो रास्ता बता रहे हैं कि इस शरीर के अन्दर एक आत्मा भी है पर मन शरीर की इन्द्रियों से मिल कर कर्म करता है पर मन और बुद्धि को बल उस आत्मा का ही है मन में अगर संसार नहीं है और हमारे विचार व्यवहार और कर्म में शुद्धता है तो इस संसार सागर से सहज ही पार हुआ जा सकता है।

नाम लेत भव सिन्धु सुखाही
करहुं विचार सुजन मन माहीं
पारि वञणु मुखे आहे जरूरी
विथियू बागुर वादुन ते आहिन घणा
हिकु काम बियो क्रोध ट्रियो लोभ थो लुभावे
चोथो चिन्ता थी
इन्द्रियुन खे विषयनि खां हटाये
शुभ विचार कर्म में लगाये
प्रेम ते परमात्मा प्रसन्न थीन्दो आहे
कहे टेऊँ चलिजि चाहो
संचनि संतन गुरुन वारो
हकीकत जो हणी नारो निसंगु थीउ तूं

हमारे सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज जिन्होनें बाहर के नेत्र न होते हुये भी अपने अन्दर के प्रेम और ज्ञान के नेत्रों से सारे जग को रोशन कर दिया उन्होंने सेवा सत्संग सत्पुरुषों के संग से नाम के स्मरण से और गुरु के आशीर्वाद से उच्च पद को पाया।

सत्गुरु कया सावा से पाण ही पधिरा
कहिसां रखिन कीन की दर्द बंद दावा
पंहिजा पराया सभु दिसनि सामी चवे
वरयनि जे वण सुकल में
फलु करन्दो आ काज सरन्दो आ
सतगुरु जीं आसीस सां

मन रूपी वृक्ष में गुरुदेव के आशीर्वाद से गुण रूपी फल उगते हैं। उन गुणों से शान्ति मिलती है पर इस राह में अटकाव विघ्न भी बहुत हैं। कीर्ति, कंचन, नार, यश, माया आदि जिस पर उसकी कृपा है। वो पार हो जायेगा। रजो गुण, तमो गुण, सतो गुण, तीनों से उपर जो है वह उसे पहचान लेता है।

सत्गुरु तेरी चरण धूल से लाखों पापी तर जाते।
जिन पर तेरी दया दृष्टि हो वो ना कभी भी दुख पाते
चरणों में मुझको भी बिठा दो गुरुबाबा
तुम बिन जग में मेरा कोई और नहीं आधार है।

परमात्मा से प्रेम हुआ तो मन शुद्ध हुआ। शुद्ध मन स्मरण में लग जायेगा। उस पद की प्राप्ति होगी। जहां महापुरुष पहुंचते हैं।

आचार्य श्री के चरणों में रहकर स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ने भी वही पदवी पायी।

भजन–स्वामी शान्ति प्रकाश महान आ
जणु सचपच ही भगवान आ

1. शंकर वांगे ध्यान लगाऐ
सत्नाम साक्षी नाम जपाए
जहिं तारयो सजो ही जहानु आ

2. विष्णु रूप थी पालयो सभ खे
दीन गरीबनि मोहताजनि खे
दिनो अन् धन् ऐं सन्मान आ

3. ब्रह्मा थी जहिं ज्ञान सुणायो
प्रेम प्रकाशी थी शान वधायो
जहिं कयो वेदनि जो व्याख्यान आ

4. कृष्ण रूप थी रास रचाई
वचननि रूपी बंसी वजाई
सारी संगति कई मस्तान आ

22–8–02 को रक्षाबन्धन के अवसर पर सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जन्मोत्सव में विशेष सत्संग सभा में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज प्रवचनों में बता रहे हैं कि गुरु का नाम बड़ा ही शक्तिशाली है।

सत्नाम साक्षी मिठो आहे माखी
जगियासी नित जपियो प्रेम प्रकाशी

गुरु मंत्र स्मरण करने से अन्तर में शान्ति और शक्ति मिलती है। परमात्मा सत्चित् आनंद है जिसका तीनों कालों में भूत, वर्तमान, भविष्य में अंत नहीं है। वह सत् और आनन्दमयी है। जिसमें स्वयं का आनन्द है। जो स्वयं आनन्द का भण्डार है। मन बुद्धि इन्द्रियों को आत्मा का ही बल है। वह आ स्वरूप ही सत्नाम साक्षी है। इसका हमें स्म करना चाहिये।इसी नाम का रस जिन संतों ने लिया। वह संसार के रसों से अपनी वृति हटा परमात्मा से मानों मिल गये। इस नाम का स्म करते–करते संसार के बंधनों से मुक्त हो गये। की महिमा वही जान सकता है जिसे गुरु सानिध्य मिला। संसार की असारता को देख लि हो जिसने सत्गुरु महाराज ने [illegible]म पंक्ति में बत इस नाम सत्नाम साक्षी का जो स्मरण करता है लोक परलोक में यश व धन की प्राप्ति होती सत्गुरु हरिदासराम जी महाराज भी बताते थे।

नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं।
करहु विचार सुजन मन माहीं।।

विचार से नाम स्मरण करें।गुरु के वचनों समझें। उन पर चलकर जीवन धन्य बनावें। नामदेव जी महाराज सत्संग सभा को आगे बढ़ाते प्रेमियों को आव्हान करते हुए कह रहे हैं। सत निराकार है। और प्रत्यक्ष जो दर्शन हमें हो रहे वो साकार हैं। निराकार को हम साकार में पह नहीं पा रहे है।

दर्शन मिले गुरुअ जो कहिखें नसीबनि सां।
रहिमत थिये गुरुन जी कहिते नसीब सां।

पर हम बेखबर हैं। उनके गुणों को वीचारें। वे सागर के समान गहरे हैं। सागर कि नदियों को अपने अंदर जगह देता है।

एक बार राजा अकबर का दरबार सजा सारे दूसरे मंत्री बीरबल से जलते थे, ईर्ष्या करते एक दिन सभी मंत्रियों ने सलाह मशवरा कि बीरबल को नीचा दिखाने का। सो सबने बीरबल विरुद्ध राजा के कान भरे। राजा अकबर ने बी को बुलाया और प्रश्न किया। बताओ। यहाँ पर स मन में क्या चल रहा है ? सवाल तो बड़ा ही था। पर बीरबल हंसकर बोले। ये तो बहुत आसान है। बच्चे भी जान जायेंगे। सभी मन में

मंगल कामना कर रहे हैं। महाराज की उमर बड़ी हो। वे सदा स्वस्थ रहें जब सबसे पूछा गया तो कौन कहे कि राजा के प्रति हम मंगल कामना नहीं कर रहे थे। सभी राजा को हामी भरने लगे। बीरबल बड़े ही ज्ञाता और चतुर थे। सभी ने हार मान ली।

परमात्मा के मिलन से ज्यादा जुदाई अच्छी है। कम से कम परमात्मा की याद तो आती है। कहीं मेलाप से प्रेम बढ़ता है तो कहीं वियोग से।

नाम भगवान का जो दिल से लिया करते है।
भगवान उन्हीं भक्तों को पार किया करते है।।

सभा के अन्त में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी मृदुल व ओजस्वी वाणी में सभा को सम्बोधित करते हुए बताते हैं।

सत्गुरु की कृपा बिना भव सिंधु तरे न कोय।
तांते गुरु की शरण ले, जे भव तरना होय।।

भजन–करणों आ पार तरणो आ भव सागर जे मीड़ मां।

संसार मन का है। जिससे पार जाने की कला हमें संत महात्मा बताते हैं सिखाते हैं। भगवान श्रीराम का राजतिलक होने वाला था, पर एक रात में खेल बदल गया, लीला बदल गयी। पिता दशरथ और मां कैकई की आज्ञा हो गयी 14 साल का वनवास। मां कौशल्या कहती है, पिता से माता की आज्ञा 10 गुना ज्यादा मानी जाती है। मैं चाहूं तो तुम्हें रोक लूं। मेरा अधिकार ज्यादा है, पर मैं तुझे आज्ञा देती हूं, जा। तुझे अयोध्या से 150 गुना सुख ज्यादा मिलेगा ये आशीर्वाद मैंने तुझे दिया। गुरु माता पिता की आज्ञा राम जी ने स्वीकार की। अजब आ राम जी लीला छा मां छा बणाऐ थो।

बन्दे जे मन में हिकड़ी, प्रभु वरी बी बणाऐ थो।
1. **हुई जा आश दशरथ खे तख्त मां राम खे दीदुंस**
मिलियो बनवास रघुवर खे कर्म उल्टा कराऐ थो।

जिसने भी माता पिता और बड़ो के अप्रिय वचन भी सहन कर लिये खुशी–खुशी आज्ञा पालन की। वे थे श्रीराम इतिहास हमें सिखा रहा है। भोग पदार्थो में भी मन की शान्ति नहीं है। उस क्षण भंगुर सुख को स्थिर मान बैठे हैं। आंखें सुदरता में, कान स्तुति में, जबान स्वाद में, अटकी है। आनन्द क्षणिक है। क्षण के बाद फिर व्याकुलता फिर वो आनंद कहां गया। जो नित्य आनंद है वो तब मिलेगा जब सेवा स्मरण और गुरु की आज्ञा पालन करेंगे, उन्हीं का मन निर्मल होगा।

कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
पाछे लागे हरि फिरे कहत कबीर।।
मुंहिंजी रसना जप तूं राम
तहिमें तुहिंजो आ भलो।
पंचर पराई करणु छदे दे
नकी घणों गाल्हाई तूं
संतन शास्त्रनि ज पढ़ु चरित्र
गीत प्रभुअ जा गाइ तूं
करि दम दम ईहो काम
तहिंमें तुहिंजो आ भलो

मन भूतकाल, और भविष्यकाल की सोच, या कल्पनाओं में लगा रहता है। इस चक्कर में वर्तमान भी हाथों से निकल जाता है। पुरानी आदतों को छोड़कर संतों के वचनों पर ध्यान दो। नानक स्मरण करके जीवन सफल करें। सत्गुरु शान्तिप्रकाश जी महाराज प्रेम श्रद्धा विश्वास से उस मंजिल तक पहुंचे। हम भी उनकी बतायी शिक्षाओं पर चलेंगे तो बेड़ा पार होगा।

जिनके मन व इन्द्रियों ने संसार की आशा इच्छा वासनाओं से शांति प्राप्त की अथवा हृदय अन्तर में चाहना या कोई चिन्ता नहीं है वे राजा महाराजा हैं। आगे बताया कि मानव की शोभा वस्त्रों व रूप धन से नहीं अपितु श्रेष्ठ गुणों से है, एक स्त्री अपना श्रृंगार कर अपने पति को प्रसन्न करे न कि जगत को। यहां पर विदेश यात्रा दौरान प्रत्येक घर में आरसी लगी है जहां हर समय यह मनुष्य अपने को देखता है ऐसे ही गुरू सन्तों के ज्ञान उपदेश शिक्षा का अन्र्तकरण स्वरूप आरसी में अपने आप को देखें सत्‌गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज जी ने

बताया कि जिस मानव की इच्छाएँ व जरूरतें कम हैं। वही शांति को पायेंगे शांति मिलेगी, शांति करने से, मीठा बोल बोलें बड़ों का आदर करें, माता–पिता का सम्मान करें–

"महिरबान करि महिर ईहाई मन में को ना मानु रहे,
सतगुर संतनि पाण वदनि खे निविड़ी सीसु निवाया मां"

सत्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज ने बताया कि तन व मन के अंतर शांति के साथ बुद्धि के अंतर भी शांति का बोध रहे, शरीर के साथ जीवन में बल भी शांति का होवे ऐसी गुरूदेव से प्रार्थना करते हुए वह शांति पाई व उसी शांति का सर्वत्र प्रकाश किया। यथा नाम गुण को पाकर उन्होंने अनंत लोगों के जीवन को प्रकाशित किया।

इससे पूर्व संत नामदेव जी महाराज ने अपने प्रवचन में बताया कि–

स्वामी टेऊँराम प्यारा पहिंजी शरणि लगाइन्दे,
दई ज्ञानु सचो सांई सच्ची राह लगाईन्दे,
विश्व व्यापक होय रहा, तुम जीव चराचर मांही

यह संसार परमात्मा का खेल है जिसको हम सच्चा समझ बैठे हैं, देखें परन्तु इसमें अटक न जायें हर एक संत सौदा दे रहे हैं हम लगे तो हमें फायदा होगा सिर्फ पूछते हैं लेकिन लेते नहीं, तो खुशी कैसे होगी नहीं होगी। सत्गुरू शांति प्रकाश महाराज बताते थे जो पलड़ा भारी होता है वह नीचे होता है। आपका पलड़ा भारी है, आप नीचे हैं, भूमि पति हैं। परन्तु, का संग पा करके हम उन जीवन से सीखें।

नारायण हरि भक्ति की एक यही पहचा आप अमानी हो रहे और को देवे मान बच्चे की प मास्टर लेते हैं। सोने की परीक्षा कसौटी पर होती रामायण का प्रसंग बताते हुए कहा कि सीता म पास रावण योगी के वेश में आया, भिक्षा मांगी अ उठाकर ले गया। सीता ने बहुत समझाया प रावण ने न तो उनका माना न ही मंदोदरी का क माना, उनका अंत में नाश हुआ। सत्गुरू टेऊँराम महाराज, के पास माया आई, परीक्षा की, प सत्गुरू टेऊँराम जी महाराज ने माया को लिया। यह अपनी भक्ति की परीक्षा जान कर स हुए ऐसे ही संतों की परीक्षा इस माया के द्वारा जाती है–

भागनिवारा से थई जग में सत्गुर जनि खे यादि अ
श्रद्धा सां जे दीहं मलाइनि अन्दर में उत्साह रखी
चइनि जुगनि में अङण उन्हनि जा रहनि सदा आबाद अ

इनके पूर्व सन्त स्वामी हरिओमप्रकाश जी महा ने सत्संगामृत का पान कराते हुए कहा कि–

प्रेम बिना पहुचे नहीं को जन हरि के धाम।
कहे टेऊँ तांते जपो प्रेम सहित हरि नाम।।

भजनः–मां त बुधी प्रेम जी बाणी।
बी कान वणे त कहाणी।।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में कार्तिकोत्सव
6 नवम्बर से 19 नबम्बर 2002 तक
कार्यक्रम

प्रभात फेरी प्रतिदिन प्रातः 6 से 7 बजे तक **सत्संग व कार्तिक कथा** प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे तक
भक्ति संध्या–सत्संग–आरती प्रतिदिन सांय 4 से 6 बजे तक

विशेष

6 नवम्बर 02	बुधवार	चन्द्रदर्शन–भाईदूज	15 नवम्बर 02	शुक्रवार	देव प्रबोधिनी (एकादशी)
12 नवम्बर 02	मंगलवार	गोपाष्टमी			
13 नवम्बर 02	बुधवार	आंवला नवमी (आंवला वृक्ष पूजन)	19 नवम्बर 02	मंगलवार	पूर्णिमा उत्सव समापन

19 नवम्बर 02 को प्रातः 7 से 11–सत्संग पाठों का भोग सत्यनारायण कथा, कार्तिक कथा–उत्सव समापन एवं आम भण

जयपुर समाचार दर्शन

गुलाबी नगरी में प्रेम प्रकाश सत्संग भवन का उद्धाटन

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की असीम कृपा से गुलाबी नगरी जयपुर में 'प्रेम प्रकाश सत्संग भवन' रूपी नन्हा पुष्प खिला।

जयपुर में स्थित साँगानेर की सिन्धी कॉलोनी में १३ सितम्बर २००२ (शुक्रवार) को श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डल के करकमलों से प्रेम प्रकाश सत्संग भवन व स्वामी हरिदासराम कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र का उद्धाटन हुआ। इस पावन अवसर पर साँगानेर वासी फूले नहीं समा रहे थे जब "महाराज श्री" वहाँ पधारे।

"पूज्य महाराज श्री" के स्वागत हेतु सात द्वार बनाये गये, एवं बैण्ड बाजों के साथ विशाला शोभा यात्र निकाली गई। इस शोभा यात्र में माता–बहनों भाईयों ने बढ़–चढ़कर बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। लगभग १ घण्टे की विशाल शोभा यात्र की समाप्ति के पश्चात् सिन्धी कॉलोनी, सांगानेर में स्थित नन्हें प्रेम प्रकाश सत्संग भवन का पूज्य महाराज श्री ने फीता काटकर उद्घाटन किया। सत्संग भवन के ऊपरी भाग पर ध्वजा भी स्थापित की गयी। परिसर के मध्य में "स्वामी हरिदासराम कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र" का उद्घाटन भी "पूज्य महाराज श्री" व संत मण्डल के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् भवन के बाहर भव्य सत्संग पंडाल में सत्संग का आयोजन हुआ। सत्संग समाप्ति के पश्चात् पल्लव पाकर समारोह का समापन हुआ। इस समारोह में पूज्य पंचायत सांगानेर, श्री गोपालदास जी, ध्रुव माता एवं कर्मठ सेवाधारियों का भरपूर योगदान रहा।

स्वामी हरिदासराम महाराज निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण शिविर का दूसरा केन्द्र भी शुरू

परम पूज्य सत्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज के मई में पावन जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर जयपुर की प्रेम प्रकाशी महिलाओं द्वारा जरूरतमंद बहनों व माताओं के लिए प्रथम कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई थी। इस केन्द्र ने अपना प्रथम वैच शास्त्री नगर में एक जून २००२ से आरंभ किया इसमें ३२ बहनों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कम्प्यूटर प्रशिक्षण के साथ–साथ समिति ने कम्प्यूटर के आधारभूत विन्दु बेसिक एम.एस. डॉस, एम.एस. ऑफिस, फोटो शॉप एवं टेली आदि का एक पैकेज बुक तैयार किया एवं प्रशिक्षण के दौरान सभी को इसका प्रशिक्षण देकर यह पुस्तक भेंट की गई तथा श्री अमरापुर दरबार के संत मण्डल के कर कमलों से उन्हें पुरस्कृत किया गया। शास्त्री नगर केन्द्र ने अपना द्वितीय वैच गुरू पूर्णिमा पर २४ जुलाई २००२ को आरंभ किया। जिसमें २८. लड़कियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समिति ने अपना दूसरा केन्द्र रूप विहार न्यू सांगानेर रोड पर आरंभ किया जिसका उद्धाटन १३ सितम्बर २००२ को सत्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों से हुआ। यहां वर्तमान में ३२ बहनें प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

–पुष्पा देवी, जयपुर

प्रेम प्रकाश आश्रम फरीदावाद का वार्षिकोत्सव स्थगित

प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रेम प्रकाश आश्रम गोपी कालोनी फरीदाबाद का नवनिर्माण का कार्य शुरू हो जोने के कारण, माह अक्टूबर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला वार्षिकोत्सव (माता चतरीबाई का वर्सी उत्सव) इस वर्ष फरीदावाद में आयोजित नहीं होगा। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय से प्राप्त एक अपुष्ट सूचना के अनुसार माता चतरीबाई का वार्षिकोत्सव श्री अमरापुर स्थान जयपुर में मनाये जाने की संभावना है।

सूरत आश्रम समाचार

सूरत १७ अगस्त २००२। श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महार के जीवन–दर्शन पर एक अखिल भारतीय निबन्ध स्पर्धा के आयोजन में सारे भारतवर्ष से जयपुर के बाद दू नम्बर पर सर्वाधिक प्रतियोगी सूरत शहर के थे और इन भाग्यशाली प्रतियोगियों को प्रमाणपत्र व पुरस्क युगपुरुष सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के ६६ वें जन्मोत्सव के अवसर पर स्वामी टेऊँराम आ रामनगर सूरत में आयोजित भव्य सत्संग समारोह में पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज के कर कमलों हजारों प्रेमियों की गगनभेदी तालियों के गड़गड़ाहट के मध्य दिये गये।

इसी सत्संग समारोह में सूरत के सिन्धी छात्र–छात्रओं के उत्साहवर्धन के लिये स्वामी टेऊँराम आश्र रामनगर सूरत द्वारा 'दी बेस्ट स्टूडेन्ट ऑफ ईयर अवार्ड का'' पुरस्कार प्रतिवर्ष एक छात्र व एक छात्र दिया जाता है। सर २०००–२००१ के लिये रवि पेसूमल भाग्या व कुमारी आरती दयाराम हासानी को २००१–२००२ के लिये जितेन्द्र मूलचन्द साधवानी व निशा श्रीचन्द चंदवानी को 'दी बेस्ट स्टूडेन्ट ऑफ ई अवार्ड' स्वामी देवप्रकाश जी महाराज के कर कमलों से प्रदान किया गया।

फूलों में फूल ज्यादा है। लेकिन गुलाब के फूल जैसा नहीं नदियों में नदियां ज्यादा हैं। लेकिन गंगा जैसी नहीं। सन्तों में सन्त ज्यादा है। लेकिन स्वामी टेऊँराम जैसे नहीं।

ऐसे हमारे युगविभूति मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जितनी महिमा ग जाये कम है। महिमा करते–करते शब्द भण्डार कम पड़ जायेगा। ऐसे हमारे मालिक सद्गुरु स्वामी टेऊँ जी महाराज के महिमा भजनों की प्रथम सी–डी (एम.पी.–३) का निर्माण सूरत आश्रम द्वारा किया गया सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के महिमा भजनों का सुन्दर संकलन सूरत आश्रम के कर्मठधारी सदर द्वारा किया गया है। सूरत आश्रम पर समय–समय पर पधारकर पूज्य स्वामी अशोकप्रकाश जी महाराज द्व आचार्य श्री के महिमा भजन गाये गये, उन्हीं संकलित भजनों की स्वामी अशोक प्रकाश जी के स्वर में स छःह घण्टे की एम.पी.–३ सी.डी. का विमोचन १७ अगस्त को स्वामी देव प्रकाश जी महाराज के कर कम से सम्पन्न हुआ।

दिनांक १४–८–२००२ को सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज का दिनांक २४–८–२००२ को सत्गुरु स्व शान्तिप्रकाश महाराज का एवं दिनांक ३–६–२००२ को सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का उत्सव सादगी पूर्वक मनाया गया।

इन उत्सवों में सूरत के सिन्धी स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने सुबह दरबार आकर प्रार्थ सभा के आयोजन में प्रार्थना की, गुरु महाराज की जय–जयकार की और गुरु महाराज की आरतियाँ व बाद में बच्चों को प्रसाद बांटा गया।

–रमेश राजपाल, प्रेमप्रकाशी, सूरत

भुसावल में मुफ्त चिकित्सा शिविर

प्रेम प्रकाश आश्रम, ४५ सिंधी कॉलोनी, भुसावल द्वारा सर्व रोगों के निदान का मुफ्त चिकित्सा शिवि सर्वसाधारण के लिये सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज के ६६ वें जन्मोत्सव अवसर पर ३१ अगस व १ सितम्बर को आयोजित किया गया। नेत्र ज्योति हॉस्पिटल बाबा गरीबदास मंदिर ट्रस्ट के सहयो से आयोजित शिविर में नगर के जाने माने चिकित्सकों ने रोगियों का परीक्षण कर, उपचारार्थ निःशुल दवाईयां वितरित की गयीं। इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार अनेक शारीरिक जांचों की व्यवस्था मशीनों द्वारा आश्रम ट्रस्ट द्वारा मुफ्त में की गयी।

शोक-समाचार

पलवल-सत्गुरु महाराज के अनन्य प्रेमी श्री जयदेव जी पेन्टर, १५ सितम्बर २००२ को लगभग ४८ वर्ष की अल्पायु में एक सड़क दुर्घटना में श्री अमरापुर धाम सिधारे। ज्ञातव्य हो कि पेन्टर के नाम से विख्यात श्री जयदेव जी केनवास के अच्छे कलाकार थे, अभी पिछले दिनों चैत्र मेले के पूर्व श्री अमरापुर धाम के सत्संग सभागार में आचार्य श्री की जीवन चित्रवली व दीवारों पर हमारे पूर्वज सभी सन्तों के चित्रें को बड़ी ही कुशलता पूर्वक बनाया था श्री जयदेव जी ने, इसके अतिरिक्त दिल्ली, ग्वालियर इत्यादि अनेक आश्रमों में अनेकों चित्र जयदेव जी के कुशल हाथों की देन है। २७ सितम्बर पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली द्वारा दुबई से लौटते ही दिल्ली विमानतल से ही पलवल श्री जयदेव जी के निवास पर परिवार जनों को ढांढस बन्धाने पहुंचे। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये पूज्य गुरु महाराज जी द्वारा सत्संग प्रार्थना की गयी।

स्पेन-१५ सितम्बर। सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अनन्य प्रेमी माता नीलम जी के सुपुत्र श्री विशाल जी मात्र २५ वर्ष की अल्पायु में आज सड़क दुर्घटना में स्पेन में ही, श्री अमरापुर धाम सिधारे। श्री विशाल जी का विवाह दुर्घटना से ठीक एक महीने पहिले ही हुआ था। स्पेन यात्र में पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली की सेवा में अपना भरपूर समय विशाल ने व्यतीत किया था। श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रभु परमात्मा से प्रार्थना की।

डबरा-स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, डबरा के व्यवस्थापक श्री नारायणदास जी ७५ वर्ष की आयु में (भाटापारा में) ६ अक्टूबर को अपनी पा×चभौतिक देह त्याग कर प्रभु–परमात्मा के श्री चरणों में सर्वदा के लिये लीन हो गये। श्री नारायणदास जी का अंतिम संस्कार ७ अक्टूबर को भाटापारा में ही किया गया। शेष संस्कार डबरा आश्रम में संपन्न किये जा रहे हैं।

पुस्तक समीक्षा **गुरु-आराधना** **मूल्य १०-१० रूपये**

(हिन्दी-सिन्धी-अंग्रेजी महिमा भजन पुस्तक)

१०८ अंकों का महत्व भी अपना ही है। जो कि ब्रह्मशब्द से प्रतिपादित है। ऋषि–मुनियों द्वारा रूद्राक्ष की माला के मोती भी १०८ ही होते हैं। सन्तों महात्माओं को सम्मानित भी १०८ की पदवी से किया जाता है। इन्हीं तथ्यों के अनुसार १०८ पवित्र व पूर्णांक माना जाता है। पूर्ण अंक को विशेष महत्त्व देते हुए श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के महिमा सम्बन्धी गुरु आराधना नाम से १०८ मोती की माला अर्थात १०८ भजन माला पुस्तक प्रकाशित की गयी है।

इस गुरु आराधना पुस्तक में प्रार्थना–चालीसा, गुरुप्रार्थनाष्टक, १०८ भजन, चारों गुरु महाराज की आरतियाँ सम्मिलित की गयी हैं। इसे सिन्धी– हिन्दी–अंग्रेजी तीन भाषाओं में प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक भाषा की पुस्तक का मूल्य १० रूपये रखा गया है।

कैसेट समीक्षा **महा आरती (व्ही.सी.डी.)** **मूल्य ५० रू**

पावन श्री अमरापुर स्थान जयपुर में इस वर्ष मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का ११६ वाँ जन्मोत्सव बड़े ही मनमोहक ढंग से मनाया गया। उसी अविस्मरणीय दृश्यों को एकत्रि करके एक व्ही. सी.डी. कैसेट तैयार की गयी। जिसमें महाआरती–पुरस्कार वितरण–भव्य झांकी–महाप्रसादी भोग आदि दृश्यों को सम्मिलित किया गया है। आप घर बैठे जन्मोत्सव का महाआनन्द देख सकते हैं। इस व्ही.सी.डी. कैसेट का मूल्य मात्र ५० रू. रखा गया है।

प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान एम.आई.रोड. जयपुर फोन : ३७२४२३–२४ एवं सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

७ से २१ अक्टूबर	२००२ तक	हरिद्वार	☎	०१३३-४६०१४४, ४६०८१
२२ से २५ अक्टूबर	२००२ तक	पलवल	☎	०१२७५-३४८०२, ३३७४
२६ से २७ अक्टूबर	२००२ तक	होडल, पिनगांवा	☎	०१२६८-७४३७१, ७४२२
२८ से २९ अक्टूबर	२००२ तक	हथीन	☎	०१२७५-६१२४
३० अक्टूबर	२००२	दिल्ली	☎	०११-३९६९७७
३१ अक्टूबर	२००२	यात्रा		
०१ से ०२ नवम्बर	२००२ तक	पूना	☎	०२१-६३५४९०
०३ नवम्बर	२००२	यात्रा		
०४ से ०६ नवम्बर	२००२ तक	जयपुर	☎	०१४१-३७२४२३, ३७२४२
०७ नवम्बर	२००२	नासिक	☎	०२५३-५१३४१
०८ से १० नवम्बर	२००२ तक	पूना	☎	०२१-६३५००३
११ से १३ नवम्बर	२००२ तक	पिम्परी	☎	०२०-७४५९४८७, ७४५६८४
१४ से १५ नवम्बर	२००२ तक	मुम्बई	☎	०२२-६०५७७११, ६०५७५७
१६ नवम्बर से ०५ दिसम्बर	२००२ तक	जकार्ता, मनीला, बैंगकांग		
०७ दिसम्बर	२००२	मुम्बई	☎	०२२-६०५७७११, ६०५७५७
०८ से १० दिसम्बर	२००२ तक	अहमदाबाद	☎	०७९-२८६३९००, २८६९८१
११ से १४ दिसम्बर	२००२ तक	कोटा	☎	०७४४-४५१४७६, ३२५८७
१५ दिसम्बर	२००२	अजमेर	☎	०१४५-६२२५२
१६ से १७ दिसम्बर	२००२ तक	जयपुर	☎	०१४१-३७२४२३, ३७२४२
१८ से १९ दिसम्बर	२००२ तक	बड़ौदा	☎	०२६५-५६५०९

तीज-त्यौहार

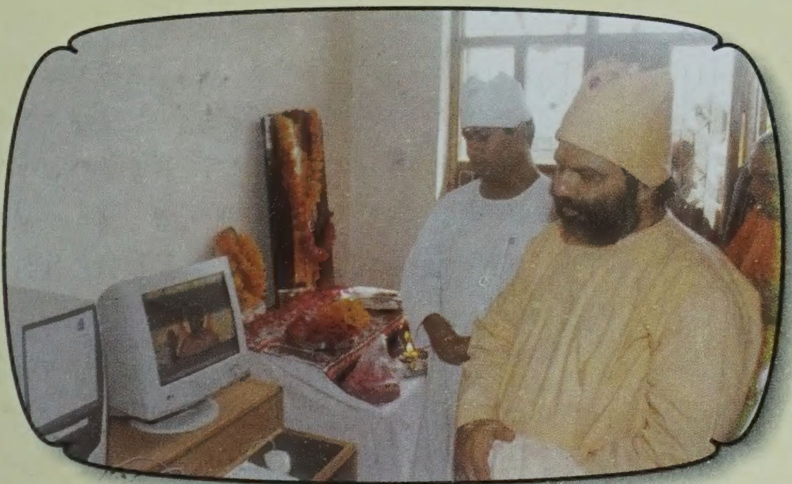
१६	सितम्बर २००२	सोमवार	आश्विन संक्रान्ति
१७	सितम्बर २००२	मंगलवार	पदमा एकादशी व्रत
२०	सितम्बर २००२	शुक्रवार	अनन्त चर्तुदशी
२१	सितम्बर २००२	शनिवार	श्री सत्यनारायण व्रत, श्राद्धपक्ष शुरू
२५	सितम्बर २००२	बुधवार	श्री गणेश चौथ व्रत
०१	नवम्बर २००२	शुक्रवार	श्री रमा एकादशी व्रत
०२	नवम्बर २००२	शनिवार	धनतेरस
०३	नवम्बर २००२	रविवार	रूपचौदस, नरक चौदस
०४	नवम्बर २००२	सोमवार	अमावस्या, दीपावली, महालक्ष्मी पूजन
०५	नवम्बर २००२	मंगलवार	श्री गोवर्धन अन्नकूट पूजा
०६	नवम्बर २००२	बुधवार	चन्द्रदर्शन, भैयादूज
१२	नवम्बर २००२	मंगलवार	गोपाष्टमी
१३	नवम्बर २००२	बुधवार	आंवला नवमी
१५	नवम्बर २००२	शुक्रवार	देव प्रबोधिनी एकादशी, स्वामी धर्मप्रकाश जयंती (बड़ौदा)
१६	नवम्बर २००२	शनिवार	मार्गशीर्ष संक्रान्ति
१९	नवम्बर २००२	मंगलवार	श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरुनानक जयंती
२३	नवम्बर २००२	शनिवार	श्री गणेश चौथ व्रत
३०	नवम्बर २००२	शनिवार	उत्पत्ति एकादशी व्रत



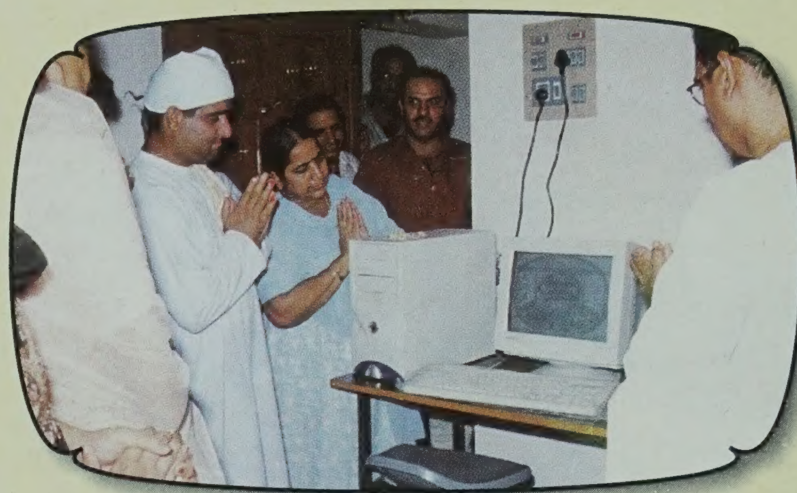
मद्रास में सद्गुरु महाराज जी, संत व भक्तों के साथ



मद्रास में सद्गुरु महाराज जी



स्वामी हरिदासराम महिला सेवा समिति, जयपुर द्वारा संचालित निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण सेन्टर रुप विहार, न्यू सांगानेर रोड़ ब्राचं का उद्घाटन करते हुए सद्गुरु महाराज जी



भाटापाड़ा में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण सेन्टर का उद्घाटन करते हुए संत शम्भूलाल जी



प्रेम प्रकाश आश्रम, इन्दौर में सद्गुरु महाराज जी



इलाहाबाद में संत कंवरराम की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए सद्गुरु महाराज जी



स्वामी हरिदासराम महिला सेवा समिति का उद्घाटन समारोह, जयपुर



मूल्य : 2 रु. | मूल्य : 5 रु. | मूल्य : 10 रु. | मूल्य : 75 रु.

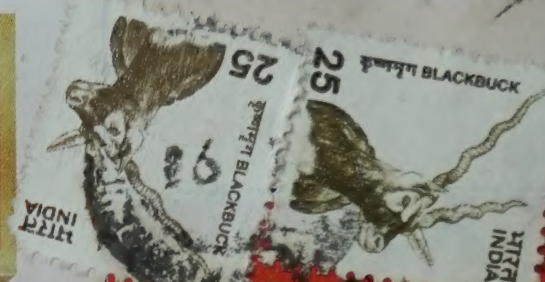
मूल्य : 5 रु. | मूल्य : 25 रु. | मूल्य : 30 रु. | मूल्य : 5 रु.

मूल्य : 5 रु. | मूल्य : 10 रु. | मूल्य : 2 रु. | मूल्य : 1 रु.

मूल्य : 50 रु. | मूल्य : 10 रु. | मूल्य : 10 रु. | मूल्य : 10 रु.

मूल्य : 51 रु. | मूल्य : 10 रु. | मूल्य : 3 रु. | मूल्य : 10 रु.

प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर



समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ
पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक, रसीद संख
अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तर
अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने
अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों क
चाहिए।

श्रीमान 4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की अधिकृत हिन्दी, अंग्रेजी व सिन्धी पत्रिकाएँ

प्रेम प्रकाश संदेश

सदस्यता शुल्क भारत में (मासिक हिन्दी में)

वार्षिक शुल्क	रु.	50.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु.	140.00
विदेश में वार्षिक शुल्क	रु.	350.00
त्रैवार्षिक शुल्क	रु	

पत्रिका मंगवाने का पता : संपादक
प्रेम प्रकाश संदेश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर - 474001

AMRAPUR SANDESH

(ENG.) QUARTERLY

Membership Fees : India

1 Year	Rs. 200.00
3 Year	Rs. 550.00
Foriegn 1 Year	Rs. 500.00
3 Year	Rs. 1400.00

Available at : Editor
Amrapur Sandesh
Shri Amrapur Asthan, M.I. Road, Jaipur
Ph. : 372423, 24

SATNAM SAKHI SAN

(SINDHI) QUA

Membership Fees : India

1 Year	Rs.
3 Year	Rs.
Foriegn 1 Year	Rs.
3 Year	Rs.

Available at : Editor
Satnam Sakhi San
Shri Amrapur Asthan, M.I. Roa
Ph. : 372423, 24

सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, (फोन 327427) श्रीचंद पंजवानी, (फोन-454183) श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी लाला का बाजार, फोन : 427502 से सज्जा करवाकर ॐकार ऑफसेट, दौलतगंज से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आ की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया। आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा : गणपति जयपुर, फोन : 207612